

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार



WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

বাইজৰ কথা বাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 2 October 2026 :: Year-1 Vol-38 Issue-17 :: शुक्रवार। 2 अक्टूबर 2026। शक संवत 1948। आश्विन। कृष्ण। षष्ठी। :: पृष्ठ-20। मूल्य - 15 रुपए



जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

माल्यार्पण नहीं आत्ममंथन चाहिए

2 अक्टूबर आते ही देश महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की तस्वीरों पर फूल चढ़ाता है। सरकारी दफ्तरों में कार्यक्रम होते हैं, भाषण दिए जाते हैं, स्वच्छता अभियान चलते हैं और सोशल मीडिया श्रद्धांजलियों से भर जाता है। लेकिन क्या इतनी औपचारिकता से गांधी और शास्त्री हमारे जीवन में लौट सकते हैं?

शायद नहीं।

गांधी को याद करना आसान है, गांधी के सत्य को स्वीकार करना कठिन। शास्त्री का नाम लेना आसान है, उनकी सादगी और ईमानदारी को जीवन में उतारना कहीं अधिक कठिन। गांधी ने सत्ता के सामने सत्य को खड़ा किया और शास्त्री ने सत्ता में रहते हुए भी शेष पृष्ठ 2 पर

जदयू में खींचतान, सड़क पर पहुंची बात

ढीली पड़ती नीतीश की पकड़!

जन जन विचार

...✍ पटना

बिहार की राजनीति में विधान परिषद चुनाव ने जनता दल यूनाइटेड के भीतर चल रही खींचतान को अब सड़क पर ला दिया है। जदयू विधायक अनंत सिंह ने गुरुवार को वह कर दिखाया जिसकी राजनीतिक हलकों में कई दिनों से चर्चा थी–वे पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी नीरज कुमार के खिलाफ खुलकर मैदान में उतर आए और जनसुराज प्रत्याशी डॉ. अनुज सिंह के नामांकन में उनके साथ खड़े दिखाई दिए।

अनंत सिंह यहीं नहीं रुके। अनुज सिंह के समर्थन में रोड शो हुआ, खुली जीप में दोनों नेताओं की तस्वीरें सामने आईं और समर्थकों की भीड़ के बीच राजनीतिक संदेश साफ दिखाई दिया। दूसरी ओर, इसी घटनाक्रम के बीच जदयू अध्यक्ष नीतीश कुमार के पटना





स्थित आवास पर पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की बैठक हुई। रिपोर्टों के अनुसार बैठक करीब ढाई घंटे चली।

यानी एक तरफ पार्टी का अधिकृत प्रत्याशी नीरज कुमार हैं, दूसरी तरफ उसी पार्टी का विधायक उसके खिलाफ खड़े प्रत्याशी के साथ खुलकर प्रचार करता दिखाई दे रहा है। यही वह तस्वीर शेष पृष्ठ 3 पर

चबाने वाला तंबाकू बना जानलेवा संकट

जन जन विचार

...✍ नई दिल्ली

तंबाकू के नुकसान की चर्चा अक्सर सिगरेट और धूम्रपान के संदर्भ में होती है, लेकिन चबाने वाला तंबाकू भी दुनिया भर में गंभीर स्वास्थ्य संकट का कारण बना हुआ है। द लैंसेट ग्लोबल हेल्थ में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2023 में दुनिया भर में चबाने वाले तंबाकू के इस्तेमाल से करीब 2.51 लाख लोगों की मौत हुई। इनमें से स्वास्थ्य नुकसान और मौतों का 90 प्रतिशत से अधिक बोझ भारत समेत केवल 10 देशों में केंद्रित रहा।



एक साल में 2.51 लाख मौतें

दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा असर

अध्ययन के मुताबिक दक्षिण एशिया चबाने वाले तंबाकू के इस्तेमाल से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र है। वर्ष 2023 में इस क्षेत्र में इससे जुड़ी करीब 2.10 लाख मौतें दर्ज की गईं। आंकड़े बताते हैं कि समस्या केवल तंबाकू सेवन करने वाले व्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर व्यापक जनस्वास्थ्य पर पड़ रहा है।

पुरुषों में चबाने वाले तंबाकू से होने वाली मौतों और स्वास्थ्य समस्याओं का 90 प्रतिशत से अधिक बोझ भारत, बांग्लादेश, चीन, पाकिस्तान और अमेरिका शेष पृष्ठ 7 पर

नीतीश के घर बैठक, बाहर अनंत का शक्ति प्रदर्शन

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे दिलचस्प राजनीतिक संयोग यही है।

बाहर–अनंत सिंह जनसुराज प्रत्याशी के साथ खुली जीप में।

अंदर–नीतीश कुमार के आवास पर जदयू के वरिष्ठ नेताओं की बैठक।

रिपोर्टों के अनुसार नीतीश कुमार के साथ जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा और उपमुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव समेत वरिष्ठ नेताओं ने बैठक की।

यानी पार्टी के भीतर इस विवाद को लेकर चर्चा अब उच्च स्तर तक पहुंच चुकी है। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि नेतृत्व अनंत सिंह के खिलाफ कोई अनुशासनात्मक कार्रवाई करेगा या बातचीत से मामले को शांत करने की कोशिश होगी। शेष पृष्ठ 5 पर

कुल्हाड़ियों की छांव में जंगल

ललित निबंध

जन जन विचार



...✍ डॉ मुकेश कुमार

गतांक से आगे...

हम हर पावन पर्व पर नदियों की भव्य आरती उतारते हैं, किनारे सैकड़ों दीये जलाते हैं, किंतु अगले ही क्षण उसमें अपने नगरों का मल-मूत्र और औद्योगिक जहर उड़ेल देते हैं। यह हमारी कैसी विडंबना और दोहरा आचरण है? जिस जननी स्वरूप नदी की गोदी में हम पले-बढ़े, उसी के पवित्र आँचल में हम स्वयं ही आग लगा रहे हैं।

किंतु, ज़रा ठहरिए और मन को स्थिर कीजिए। क्या यह गहरा अवसाद और निराशा ही हमारी अंतिम नियति है? क्या प्रकृति की इस आतुर कराहट के बीच आशा की कोई उज्ज्वल किरण शेष नहीं बची है? यदि हम अपने हृदय की गहराई से ध्यानपूर्वक सुनें, तो पाएँगे कि प्रकृति आज भी पूरी तरह हतोत्साहित नहीं हुई है। उसकी ममता इतनी असीम और दयालु है कि जरा सा मानवीय दुलार और संबल पाते ही वह पुन: नवजीवन से लहलहा उठती है। किसी कठोर कंक्रीट की निर्जीव दीवार की नन्ही दरार से भी जब एक नन्हा सा पीपल का पौधा अपना हरा सिर बाहर निकालता है, तो वह संपूर्ण मानव जाति को यही अमर संदेश देता है कि 'जीवन अभी पूरी तरह हारा नहीं है।' वह प्रकृति हर सुबह सूरज को फिर से गगन में उगाती है, इसी अमूल्य उम्मीद में कि शायद आज का विवेकशील इंसान अपनी पुरानी भूलों को सुधार ले।



मुझे एक अत्यंत कोमल और भावुक घटना स्मरण आती है। पिछले रविवार जब मैं अपने घर की छोटी सी खुली छत पर विचारमग्न बैठा था, तो मैंने देखा कि मिट्टी के एक पुराने सूखे गमले की डाल पर एक अत्यंत नन्ही सी चंचल गिलहरी आकर बैठ गई। वह सहमी हुई नजर से इधर-उधर देख रही थी, शायद भयंकर गर्मी में कुछ बूँद पानी या दाने की तलाश में। मैंने बहुत धीरे से एक मिट्टी के बर्तन में थोड़ा सा शीतल जल रखा और चुपचाप पीछे हट गया। कुछ पलों की प्राकृतिक झिझक के उपरांत वह नन्ही जान निडर होकर आगे बढ़ी, उसने तृप्त होकर जल पिया, और अपनी पूँछ मटकाती हुई छत की मुँडेर पर बैठकर धूप सेंकने लगी। उस एक दिव्य क्षण के विहंगम दृश्य ने मेरे अंतस में जमी सारी उदासी को पल भर में धो डाला। ऐसा प्रतीत हुआ मानो उस नन्हीं गिलहरी ने मंद-मंद मुस्कुराकर मुझसे आत्मीयता से कहा हो-'मित्र, अभी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ है। बस थोड़ा सा प्रेम का हाथ बढ़ाओ, हम सब मिलकर फिर से इस वसुंधरा को अत्यंत सुंदर और जीवंत बना देंगे।'

प्रकृति के उस खोए हुए दिव्य सौन्दर्य को पुन: लौटाने के लिए हमें किसी बहुत बड़े जटिल वैज्ञानिक अभियानों या भारी बजट की आवश्यकता नहीं है। इस महायज्ञ की वास्तविक शुरुआत उस एक छोटे से गमले से हो सकती है जो आपकी बालकनी में धूल धूसरित होकर खाली पड़ा है। शुरुआत उस एक पौधे से हो सकती है जिसे आप अपने जन्मदिवस के शुभ अवसर पर धरती माता की गोदी में रोप सकते हैं। जब हम प्रेम से एक नन्हा पेड़ लगाते हैं, तो हम केवल मिट्टी में काष्ठ की जड़ें नहीं रोपते, बल्कि हम आने वाली संपूर्ण नस्लों के लिए ताजी हवा, शीतल छाँव और सुंदर विहंगों के लिए एक नया अमर संगीत रचते हैं। जरा कल्पना कीजिए, कितना अद्भुत और अलौकिक होगा वह स्वर्णिम दिन जब आप प्रात: काल जागें और कमरे की खिड़की खोलते ही आपको फिर से वही प्राचीन सोंधी माटी की सुगंध मिले, वही खोई हुई गौरैया आपकी पढ़ने की मेज पर आकर बेझिझक फुदकने लगे, और दूर अनूठे क्षितिज पर नीला आसमान अपनी पूरी प्राकृतिक रंगत के साथ मुस्कुराता हुआ नजर आए। प्रकृति कोई उपभोग की निर्जीव वस्तु नहीं है, वह एक अति संवेदनशील, स्पंदित और वात्सल्यमयी माँ है। यदि हम उसकी ओर केवल एक प्रामाणिक कदम बढ़ाएंगे, तो वह हमारी ओर अपनी दुलार भरी अनगिनत बाँहें फैलाकर सहर्ष दस कदम आगे आएगी। संध्या ढल रही है, पश्चिमी आकाश में हलकी सी सिंदूरी लालिमा तैर रही है। दूर चिड़ियों का एक छोटा सा झुंड अपने बचे-कुचे घोंसलों की ओर मुड़ रहा है। उनके पंखों की फड़फड़ाहट में एक मूक संदेश छिपा है। लो, आज का एक और दिन बीत गया, किंतु कल जब नया सूरज उगेगा, तो वह एक नई अटूट आस और विश्वास के साथ उगेगा। आइए, आज रात सोने से पूर्व अपनी खिड़की की मुँडेर पर उस नन्ही गौरैया के लिए शीतल पानी का एक छोटा सा कटोरा रख दें, और अपने अंत:करण में यह पवित्र संकल्प लें कि कल भोर होते ही हम इस पावन धरती को थोड़ा सा और हरा-भरा बनाने का एक सार्थक प्रयास अवश्य करेंगे। जब तक हमारे भीतर मानवीय संवेदनशीलता का वह छोटा सा दीया जल रहा है, तब तक जंगल पूर्णत: समाप्त नहीं हो सकते और न ही मानव का हृदय कभी बंजर हो सकता है। **(समाप्त)**

पृष्ठ 1 का शेषांश...

माल्यार्पण नही, आत्ममंथन...

स्वयं को सत्ता से बड़ा नहीं बनने दिया। यही वह कसौटी है, जिस पर आज के सार्वजनिक जीवन को परखा जाना चाहिए।

गांधी का सबसे बड़ा हथियार कोई पद, सेना या सरकारी ताकत नहीं थी। उनका हथियार था-सत्य के साथ खड़े रहने का साहस। उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय और सम्मान पहुंचाने का साधन समझा। आज जब सार्वजनिक जीवन में आरोप-प्रत्यारोप, कटुता और राजनीतिक सुविधा अक्सर विमर्श पर हावी दिखाई देती है, तब गांधी का प्रश्न और भी असहज हो जाता है-क्या राजनीति में सत्य की कीमत अभी भी बची है?

और फिर शास्त्री हैं।

एक ऐसा नेता, जिसकी सादगी आज कहानी जैसी लगती है। प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल छोटा रहा, लेकिन उनकी सार्वजनिक छवि में ईमानदारी, अनुशासन और जिम्मेदारी की छाप गहरी रही। उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का आह्वान उस समय किया, जब देश गंभीर चुनौतियों से गुजर रहा था। उनके जीवन का संदेश स्पष्ट था-नेता वह नहीं जो सबसे आगे खड़ा दिखाई दे, नेता वह है जो सबसे पहले जिम्मेदारी स्वीकार करे।

आज समस्या केवल राजनीति की नहीं है। समस्या उस सामाजिक मानसिकता की भी है, जिसमें हम आदर्शों की प्रशंसा तो करते हैं, लेकिन अपने व्यवहार में उनका पालन करने से बचते हैं। हम गांधी की तस्वीर लगाते हैं, पर सत्य बोलने में हिचकते हैं। शास्त्री की सादगी की चर्चा करते हैं, पर सार्वजनिक जीवन में दिखावे और विशेषाधिकार को सहज मान लेते हैं। यही 2 अक्टूबर का सबसे बड़ा विरोधाभास है।

गांधी की प्रतिमा पर फूल चढ़ाने से अधिक जरूरी है कि हम अपने भीतर के असत्य को पहचानें। शास्त्री को श्रद्धांजलि देने से अधिक जरूरी है कि हम सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही को स्वीकार करें।

देश को आज गांधी की तस्वीरों की नहीं, गांधी के नैतिक साहस की जरूरत है। देश को शास्त्री के नारों की नहीं, शास्त्री जैसी जिम्मेदारी की जरूरत है।

राशिफल

2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर, 2026।। विक्रम संवत 2083-**मास** : आश्विन, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** :षष्ठी

मेष : इस सप्ताह कामकाज में सक्रियता बनी रहेगी। रुके हुए कार्यों को गति मिल सकती है। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापार में जल्दबाजी से बचें और महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर लें।

वृषभ : आर्थिक मामलों में यह सप्ताह सावधानी बरतने का है। अचानक खर्च सामने आ सकते हैं। नौकरी में वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिल सकता है। व्यापारियों को पुराने संपर्कों से लाभ मिलने की संभावना है।

मिथुन : नई योजनाओं पर काम शुरू करने के लिए सप्ताह अनुकूल रह सकता है। कार्यस्थल पर आपकी बातचीत और व्यवहार से लाभ मिलेगा। विद्यार्थियों को पढ़ाई में एकाग्रता बनाए रखने की आवश्यकता है।

कर्क : परिवार और कार्य के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता होगी। नौकरी में अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापार में किसी नए प्रस्ताव पर विचार कर सकते हैं, लेकिन दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ें।

सिंह : आत्मविश्वास बढ़ेगा और कार्यक्षेत्र में अपनी क्षमता दिखाने के अवसर मिल सकते हैं। वरिष्ठों से सहयोग मिलने की संभावना है। आर्थिक स्थिति सामान्य से बेहतर रह सकती है। अनावश्यक विवाद से बचें।

कन्या : कामकाज में व्यस्तता बढ़ सकती है। किसी महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना पड़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखें। उधार देने या लेने से पहले अच्छी तरह विचार करें।

तुला : यह सप्ताह संबंधों और साझेदारी के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। कार्यक्षेत्र में नए लोगों से संपर्क बनेगा। व्यापार में साझेदारी से जुड़े निर्णय सोच-समझकर लें। धन की स्थिति संतोषजनक रह सकती है।

वृश्चिक : लंबे समय से अटके कामों को आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा। कार्यक्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है, इसलिए अपनी रणनीति स्पष्ट रखें। आर्थिक लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

धनु : यात्रा और नए संपर्कों के लिहाज से सप्ताह महत्वपूर्ण हो सकता है। नौकरी में बदलाव या नई जिम्मेदारी पर विचार कर सकते हैं। व्यापार में विस्तार की योजना बन सकती है। खर्च पर नियंत्रण रखें।

मकर : करियर के लिहाज से सप्ताह महत्वपूर्ण रहेगा। मेहनत का परिणाम मिलने में थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन निरंतर प्रयास लाभ देगा। नौकरी में अधिकारियों से संबंध बेहतर होंगे। व्यापार में पुराने सौदे लाभ दे सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कुंभ : नई योजनाओं और रचनात्मक कार्यों के लिए सप्ताह अच्छा रह सकता है। नौकरी में आपकी कार्यशैली की सराहना हो सकती है। व्यापारियों को नए ग्राहक या अवसर मिल सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं।

मीन : इस सप्ताह धैर्य और सकारात्मक सोच बनाए रखना आपके लिए लाभदायक रहेगा। कार्यक्षेत्र में कुछ अतिरिक्त जिम्मेदारियां मिल सकती हैं।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

2 अक्टूबर (शुक्रवार) : षष्ठी एवं सप्तमी श्राद्ध
3 अक्टूबर (शनिवार) : जीवत्पुत्रिका व्रत, अष्टमी श्राद्ध
4 अक्टूबर (रविवार) : जीवत्पुत्रिका व्रत पारण, नवमी श्राद्ध
5 अक्टूबर (सोमवार) : दशमी श्राद्ध
6 अक्टूबर (मंगलवार) : एकादशी श्राद्ध
7 अक्टूबर (बुधवार) : द्वादशी श्राद्ध

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

धन दिशा



नॉमिनी काफी नहीं वसीयत जरूरी

त्योहारों का मौसम है-परिवार इकट्ठा होते हैं, बुजुर्ग और जवान साथ बैठते हैं। इसी खुशी के माहौल में एक जरूरी बात कहनी है, जो शायद आपके परिवार में कभी किसी ने खुलकर नहीं की।

एक सच्ची कहानी सुनिए। एक बुजुर्ग ने अपने बैंक खाते में बड़े बेटे का नाम नॉमिनी में डाला। जब वह गुजरे, बैंक ने पैसे बड़े बेटे को दे दिए। लेकिन छोटे बेटे ने अदालत में दावा किया और जीत गया। क्योंकि कानून कहता है कि नॉमिनी सिर्फ पैसे का अस्थायी रखवाला है, असली मालिक कानूनी वारिस होते हैं। **नॉमिनी और वारिस में फर्क क्या है?** नॉमिनी वह है जिसे बैंक या बीमा कंपनी पहले पैसा देती है, प्रक्रिया आसान हो जाती है। लेकिन वह पैसे का कानूनी मालिक नहीं बनता। कानूनी वारिस- उत्तराधिकार कानून के तहत जो हकदार हैं - वे बाद में उस पैसे पर दावा कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने यह बात 1984 और 2017 में साफ कर दी है। जनवरी 2026 में उड़ीसा हाई कोर्ट ने फिर यही फैसला दिया।

तो नॉमिनी बदलना काफी नहीं? नहीं। नॉमिनी सिर्फ यह तय करता है कि पैसा पहले किसे मिलेगा। वसीयत तय करती है कि पैसा आखिर में किसका होगा। अगर वसीयत नहीं है तो अदालत हिंदू उत्तराधिकार कानून के हिसाब से तय करेगी-जो हमेशा आपकी इच्छा के मुताबिक नहीं होता।

वसीयत बनवाना कितना मुश्किल है? बिल्कुल भी नहीं। एक सादे कागज पर अपनी सारी संपत्ति और उसे किसे देना है -यह लिखकर दो गवाहों के सामने दस्तखत करें। वसीयत बनवाना कितना मुश्किल है? बिल्कुल भी नहीं। एक सादे कागज पर अपनी सारी संपत्ति और उसे किसे देना है — यह लिखकर दो गवाहों के सामने दस्तखत करें। वकील से रजिस्टर करवाएं तो और भी मजबूत। लागत मामूली है 7,000 से 15,000 रुपए के बीच।

कब अपडेट करें? शादी होने पर, बच्चा होने पर, संपत्ति खरीदने पर - वसीयत अपडेट करें। अगर वसीयत नहीं है और आपके बैंक खाते, म्यूचुअल फंड, बीमा - सब में नॉमिनी है तो भी आपके जाने के बाद परिवार में विवाद हो सकता है।

इस पूजा में परिवार के साथ बैठें। खाएं, हंसें, मनाएं। और एक काम तय करें -इस महीने वसीयत बनवाएंगे। यह प्यार का सबसे व्यावहारिक रूप है।

अगले हफ्ते : स्वास्थ्य बीमा है, लेकिन क्लेम रद्द क्यों होता है? वह बात जो बीमा कंपनी आपको नहीं बताती।

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए

-कोमल जैन

पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

शिलांग में हिंदी पखवाड़ा संपन्न

जन जन विचार
...✍ शिलांग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय; कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय तथा क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, शिलांग के संयुक्त तत्वावधान में 28 सितंबर को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कैल्विन हैरिस खरशिंग, अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी रहे।



कार्यक्रम में लहुंखोथांग हैंगसिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, राजेश रंजन, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय तथा धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), मेघालय सहित तीनों कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वागत भाषण में धनलक्ष्मी चौरसिया ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हिंदी पखवाड़े का उद्देश्य हिंदीत्तर भाषी कार्मिकों को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें आत्मविश्वास विकसित करना है।

ई-पत्रिकाओं का विमोचन

समारोह में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'पूर्वाशा' के 35वें अंक तथा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय कार्यालय की 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 22वें अंक का विमोचन किया गया। दोनों ई-पत्रिकाओं का विमोचन मुख्य अतिथि सहित उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों ने संयुक्त रूप से किया।

उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मान

वर्ष 2025-26 में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय कार्यालय के अभिलेख अनुभाग को विभागीय चल शील्ड प्रदान की गई।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित अंत्याक्षरी, अनुवाद, हिंदी निबंध लेखन, हस्तलेखन, प्रश्नोत्तरी और आशुभाषण सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 2,500, 2,000 और 1,500 रुपए नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में बिनोद भुजेल, उप महालेखाकार (एएमजी-III), मेघालय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कृषि यंत्र परीक्षण संस्थान में हिंदी पखवाड़े का समापन

जन जन विचार
...✍ बिश्वनाथ चारिआली

बिश्वनाथ चारिआली स्थित भारत सरकार के कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय के अधीन उत्तर पूर्वी क्षेत्र कृषि यंत्र परीक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान में 14 सितंबर से आयोजित हिंदी पखवाड़े का शनिवार को सफलतापूर्वक समापन हुआ।

समापन समारोह की अध्यक्षता संस्थान के वरिष्ठ कृषि अभियंता एवं प्रभारी निदेशक एमआर पाटील ने की। कार्यक्रम के आरंभ में हिंदी पखवाड़े के संदर्भ में केंद्रीय गृह मंत्री एवं कृषि मंत्री के संदेशों का पाठ कृषि अभियंता नीतेश कुमार वर्मा तथा प्रशासनिक अधिकारी बितुल पायेंग ने किया।

पुस्तकालय एवं सूचना सहायक सुनील कुमार प्रधान के संचालन में आयोजित समारोह में संस्थान के कर्मचारियों के साथ उनके परिवारों और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों, प्रशिक्षणार्थियों और बच्चों को संस्थान की ओर से पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग और कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। आयोजन ने संस्थान में हिंदी के प्रति कर्मचारियों और प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिता को रेखांकित किया।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

कटघरे में चुनाव आयोग

है जिसने बिहार की सियासत में सवाल खड़ा कर दिया है-क्या यह केवल दो नेताओं की पुरानी अदावत है या जदयू के भीतर अनुशासन और नेतृत्व के लिए बड़ी परीक्षा?

नीरज के खिलाफ अनंत ने खोला मोर्चा : पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से जदयू ने मौजूदा विधान पार्षद और पार्टी के मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार को फिर उम्मीदवार बनाया है। नीरज कुमार इस सीट से चौथी बार विधान परिषद पहुंचने की कोशिश में हैं।

लेकिन टिकट घोषित होने से पहले ही अनंत सिंह ने साफ कर दिया था कि वे नीरज कुमार के समर्थन में नहीं होंगे। उन्होंने जनसुराज के डॉ. अनुज सिंह का समर्थन करने की घोषणा की और नीरज कुमार को हराने की बात कही।

सितंबर में यह विवाद पार्टी नेतृत्व तक पहुंचा। जदयू के वरिष्ठ नेताओं ने दोनों पक्षों के बीच सुलह की कोशिश भी की थी। उस बैठक के बाद नीरज कुमार ने पार्टी की एकजुटता की बात कही, लेकिन विवाद पूरी तरह खत्म होने के स्पष्ट संकेत नहीं मिले।

अब 1 अक्टूबर को अनुज सिंह के नामांकन में अनंत सिंह की खुली मौजूदगी ने इस विवाद को और ज्यादा सार्वजनिक कर दिया।

पुरानी दुश्मनी, नया चुनाव : अनंत सिंह और नीरज कुमार के बीच राजनीतिक तनाव कोई नया अध्याय नहीं है। दोनों नेताओं के बीच वर्षों से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रही है। मौजूदा विवाद में 2019 के एके-47 मामले का भी उल्लेख लगातार सामने आता रहा है। अनंत सिंह ने नीरज कुमार पर इस मामले में उनके खिलाफ साजिश की भूमिका होने का आरोप लगाया है। नीरज कुमार ने इन आरोपों को खारिज किया है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि पटना हाईकोर्ट ने अगस्त 2024 में एके-47 मामले में अनंत सिंह को बरी कर दिया था। इसलिए मौजूदा राजनीतिक आरोपों को उसी रूप में-अनंत सिंह के आरोप और नीरज कुमार का खंडन-देखना जरूरी है। लेकिन अब पुरानी व्यक्तिगत राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का असर सीधे जदयू के अधिकृत उम्मीदवार के चुनाव पर पड़ रहा है।

सबसे बड़ा सवाल—पार्टी क्या करेगी? : यही इस पूरे घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। अनंत सिंह सिर्फ कोई बाहरी समर्थक नहीं हैं। वे जदयू के निर्वाचित विधायक हैं। इसके बावजूद वे सार्वजनिक रूप से उस उम्मीदवार के साथ खड़े हैं, जो जदयू के अधिकृत उम्मीदवार नीरज कुमार के खिलाफ चुनाव लड़ रहा है।

जदयू नेतृत्व के लिए यह स्थिति इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मामला अब निजी बयानबाजी से आगे बढ़कर पार्टी लाइन बनाम व्यक्तिगत राजनीतिक समर्थन का रूप ले चुका है।

पार्टी के वरिष्ठ नेता श्रवण कुमार ने कहा है कि मामला बड़े नेताओं के संज्ञान में है और उचित समय पर इसका समाधान किया जाएगा। जदयू की ओर से सभी आठ विधान परिषद सीटों पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवारों की सफलता को प्राथमिकता बताया गया है। लेकिन गुरुवार की तस्वीरों ने यह सवाल जरूर खड़ा कर दिया है कि पार्टी अनुशासन की सीमा आखिर कहां तय होगी।

संपादकीय

आसमान कितना सुरक्षित ?

विमान में बैठा यात्री अपनी जिंदगी पायलट और सह-पायलट के भरोसे छोड़ देता है। लेकिन जब कॉकपिट ही संघर्ष का मैदान बन जाए, तो सवाल केवल एक उड़ान का नहीं, पूरी विमानन सुरक्षा व्यवस्था का बन जाता है।

दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लाईदुबई की उड़ान में भारतीय कैप्टन स्मित मच्छार पर ओमानी सह-पायलट द्वारा कथित हमला इसी चिंता को सामने लाता है। घटना के बाद विमान की सऊदी अरब के तबुक में आपात लैंडिंग करानी पड़ी। कैप्टन घायल हुए और आरोपी सह-पायलट को सऊदी अधिकारियों ने हिरासत में लिया। बाद में उसे संयुक्त अरब अमीरात को सौंप दिया गया। घटना की परिस्थितियों और आरोपी की मंशा की जांच जारी है।

सबसे बड़ा सवाल है-कॉकपिट में बैठे व्यक्ति की सुरक्षा जांच आखिर कितनी व्यापक है?

विमानन क्षेत्र में तकनीकी दक्षता जरूरी है, लेकिन उसके साथ व्यवहार, अनुशासन और असामान्य परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। यदि चालक दल का कोई सदस्य ही विमान और यात्रियों के लिए संभावित खतरा बन जाए, तो सुरक्षा की पारंपरिक व्यवस्था की सीमाएं सामने आ जाती हैं।

इस घटना में यात्रियों और चालक दल की तत्परता से बड़ी त्रासदी टली। लेकिन व्यवस्था को केवल किस्मत और त्वरित प्रतिक्रिया के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। जरूरी है कि जांच निष्पक्ष रूप से यह तय करे कि चूक कहां हुई और भविष्य में ऐसी स्थिति रोकने के लिए क्या बदलाव जरूरी हैं। कॉकपिट का दरवाजा बंद होना सुरक्षा नहीं है; असली सुरक्षा यह सुनिश्चित करना है कि उसके भीतर बैठे हर व्यक्ति पर भरोसा किया जा सके।

बढ़ रहीं बेटियां, व्यवस्था सुधरे

उच्च शिक्षा के आंकड़ों में बेटियों की बढ़ती भागीदारी निश्चित रूप से उम्मीद जगाती है। आईआईटी, आईआईएम और एनआईटी जैसे संस्थानों में छात्राओं की संख्या बढ़ी है, प्लेसमेंट के अवसर बढ़े हैं और औसत वेतन में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह बदलाव बताता है कि अवसर मिलने पर देश की बेटियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। लेकिन इसी तस्वीर का दूसरा पहलू असहज करने वाला है। जब देश उच्च शिक्षा के विस्तार और रोजगार के आंकड़ों पर गर्व कर रहा है, तब केंद्रीय वित्तपोषित उच्च शिक्षण संस्थानों में हजारों शिक्षकों के पद खाली हैं। आईआईटी, आईआईएम और एनआईटी जैसे संस्थानों में भी बड़ी संख्या में पद रिक्त होना बताता है कि केवल संस्थानों की संख्या बढ़ा देना पर्याप्त नहीं है।

उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री और नौकरी तक सीमित नहीं हो सकता। शोध, नवाचार, आलोचनात्मक सोच और चरित्र निर्माण के लिए पर्याप्त शिक्षक, प्रयोगशालाएं और बेहतर शैक्षणिक वातावरण जरूरी हैं। यदि कक्षाओं में शिक्षक कम होंगे तो बढ़ती छात्र संख्या का लाभ कितने समय तक टिकेगा? सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बेटियों की भागीदारी को केवल आंकड़ा न बनाया जाए। उन्हें नेतृत्व, शोध और निर्णयकारी भूमिकाओं तक पहुंचने के समान अवसर मिलें। अब चुनौती संस्थानों की संख्या बढ़ाने की नहीं, उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने की है। बेटियां रास्ता तय कर रही हैं; व्यवस्था को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके सामने मंजिल तक पहुंचने के लिए पर्याप्त और मजबूत संस्थागत रास्ते भी हों।

राम और शिव को न बांटें

...✍ नीरज कुमार दुबे

भारतीय राजनीति में भगवानों के नाम पर सियासत कोई नई बात नहीं, लेकिन सवाल तब खड़ा होता है जब सत्ता की राजनीति में भगवानों को भी जाति, वर्ग और क्षेत्र के खांचों में बांटने की कोशिश होने लगे। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के ताजा बयान ने यही सवाल देश के सामने ला खड़ा किया है कि क्या अब भगवान राम और भगवान शिव को भी राजनीति के अलग-अलग खेमों में खड़ा किया जाएगा? क्या राम को अमीरों का और शिव को गरीबों का भगवान बताकर आस्था को भी वोटबैंक की राजनीति में बांटने की कोशिश होगी? सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि एक मुख्यमंत्री के मुंह से निकले ऐसे शब्द देश की धार्मिक और सामाजिक एकता को कहां ले जाएंगे?



हम आपको बता दें कि एक कार्यक्रम में भाजपा पर निशाना साधते हुए तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि शिव गरीबों के भगवान हैं, जबकि राम अमीरों के भगवान हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने भगवान राम को 'चुरा' लिया है और उत्तर भारत में चुनावी सफलता के लिए राम की भावना और आस्था का राजनीतिक इस्तेमाल किया। रेड्डी ने अपने तर्क को उत्तर-दक्षिण और द्रविड़-आर्य पहचान से भी जोड़ा। उनका कहना था कि 'हम द्रविड़ हैं और उत्तर भारत के लोग आर्य हैं। हम शिव के भक्त हैं और वे राम के भक्त हैं।' उन्होंने सवाल उठाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा नेता मंचों से 'हर हर महादेव' क्यों नहीं कहते और केवल 'जय श्रीराम' का उद्घोष क्यों सुनाई देता है? रेड्डी ने कहा कि जब दक्षिण भारत में 'हर हर महादेव' बोला जाता है तो भाजपा को यह पसंद नहीं आता।

देखा जाए तो रेड्डी के बयान के बाद कांग्रेस को यह बताना चाहिए कि क्या 'भगवानों को बांटना' उसकी नई राजनीतिक रणनीति का हिस्सा है? राम को अमीर और शिव को गरीब बताकर आखिर हासिल क्या होगा? उत्तर भारत को राम और दक्षिण भारत को शिव से जोड़कर क्या देश की एकता मजबूत होगी? भगवान किसी पार्टी की संपत्ति नहीं हैं। न राम भाजपा के हैं, न शिव कांग्रेस के।

यहीं से विवाद ने राजनीतिक रूप ले लिया। केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता बंडी संजय कुमार ने रेड्डी पर भगवान राम और भगवान शिव के बीच राजनीतिक विभाजन खड़ा करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री को यह नहीं भूलना चाहिए कि उसी तेलंगाना में वेमुलवाड़ा को दक्षिण काशी और भद्राचलम को दक्षिण अयोध्या कहा जाता है। ऐसे में राम और शिव को उत्तर और दक्षिण की सीमाओं में बांटना उचित नहीं है। बंडी संजय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वाराणसी और काशी विश्वनाथ से जुड़ाव का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने वेमुलवाड़ा स्थित श्री राजराजेश्वर स्वामी मंदिर का दौरा किया।

देखा जाए तो भारतीय राजनीति में धर्म को चुनावी हथियार बनाने की प्रवृत्ति कोई नई बात नहीं है। लेकिन जब राजनीति सीधे भगवानों के बीच भी वर्ग, क्षेत्र और विचारधारा की दीवार खड़ी करने लगे, तब सवाल सिर्फ किसी एक पार्टी या नेता का नहीं, बल्कि सार्वजनिक जीवन में आस्था की मर्यादा का बन जाता है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी का ताजा बयान इसी वजह से गंभीर राजनीतिक बहस का विषय बन गया है। सवाल उठ रहा है कि भगवान राम और भगवान शिव को राजनीति के दो अलग-अलग खेमों में खड़ा करने की जरूरत आखिर क्यों पड़ी? क्या किसी भी राजनीतिक दल के लिए यह उचित है कि करोड़ों लोगों की साझा आस्था को 'अमीर बनाम गरीब' या 'उत्तर बनाम दक्षिण' की राजनीतिक श्रेणियों में बांट दिया जाए?

वैसे रेवंत रेड्डी का यह पहला विवादित बयान नहीं है। दिसंबर 2025 में उन्होंने हिंदू देवी-देवताओं की संख्या और अलग-अलग पूजा परंपराओं को लेकर भी ऐसी टिप्पणियां की थीं, जिन पर भाजपा और अन्य विपक्षी दलों ने हिंदू आस्था का मजाक उड़ाने का आरोप लगाया था। यही वजह है कि अब यह सवाल और तेज हो रहा है कि रेवंत रेड्डी के राजनीतिक भाषणों में हिंदू आस्था ही बार-बार निशाने पर क्यों दिखाई देती है? यहां हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि यह सवाल उठाना किसी दूसरे धर्म के प्रति पूर्वाग्रह नहीं है; बल्कि उद्देश्य यह पूछना है कि सत्ता और राजनीति में धार्मिक आस्थाओं के साथ समान मर्यादा क्यों नहीं होनी चाहिए?

साथ ही यहां सवाल यह भी उठता है कि धर्म और भगवान पर टिप्पणी कर रहे मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को हिंदू धर्म के बारे में कितना ज्ञान है? राम को अमीरों का भगवान बता रहे रेड्डी को शायद यह पता नहीं कि भगवान राम का शबरी के आश्रम में जाना और उनकी भक्ति स्वीकार करना, निषादराज गुह के साथ उनका आत्मीय संबंध तथा वनवासी समाज के लोगों के साथ उनका लगाव इस बात के उदाहरण हैं कि राम के लिए भक्त की सामाजिक या आर्थिक स्थिति जरा भी महत्व नहीं रखती। जिन राम ने पिता के वचन की लाज रखने के लिए सारा राजपाट छोड़कर वन की राह पकड़ ली उन्हें अमीरों का भगवान बताना बेशर्मी की पराकाष्ठा है। वहीं भगवान शिव की आराधना में भी भक्तिभाव को ही प्रमुख माना जाता है। एक और बात रेवंत रेड्डी को जाननी चाहिए कि रामचरितमानस के उत्तरकांड में भगवान राम स्वयं शिव की महिमा बताते हुए कहते हैं कि शंकर की आराधना के बिना उनकी भक्ति भी प्राप्त नहीं हो सकती। यानी जिस राम को राजनीति में 'अमीरों का भगवान' और शिव को 'गरीबों का भगवान' बताकर दो वर्गों में बांटने की कोशिश की जा रही है, उसी राम की परंपरा शिव को अपनी भक्ति का मार्ग बताती है।

देखा जाए तो रेड्डी के बयान के बाद कांग्रेस को यह बताना चाहिए कि क्या 'भगवानों को बांटना' उसकी नई राजनीतिक रणनीति का हिस्सा है? राम को अमीर और शिव को गरीब बताकर आखिर हासिल क्या होगा? उत्तर भारत को राम और दक्षिण भारत को शिव से जोड़कर क्या देश की एकता मजबूत होगी? भगवान किसी पार्टी की संपत्ति नहीं हैं। न राम भाजपा के हैं, न शिव कांग्रेस के। आस्था करोड़ों भारतीयों की निजी और सांस्कृतिक विरासत है। राजनीति को अगर धर्म से दूरी नहीं रखनी है तो कम-से-कम धर्म के प्रति मर्यादा तो रखनी ही होगी। भगवानों के नाम पर वोट मांगने की राजनीति हो या भगवानों को ही राजनीति के अखाड़े में एक-दूसरे के सामने खड़ा करने की सियासत हो, दोनों ही रूपों में आस्था का राजनीतिक इस्तेमाल सवालों के कठघरे में खड़ा होता है।



पंचायतों को बाल विवाह मुक्त बनाने का संकल्प

संजय गुप्ता, शिवहर। जिले की सभी 53 पंचायतों को बाल विवाह मुक्त बनाने के उद्देश्य से जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में श्री नवाब उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिवहर में बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भाग लेकर बाल विवाह के विरुद्ध शपथ ली।

कार्यक्रम का आयोजन बिहार ग्राम विकास परिषद के सहयोगी संगठन जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों, युवाओं, अभिभावकों और आम लोगों को बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना तथा इसे रोकने के लिए सामूहिक प्रयासों को मजबूत करना था।

अनुमंडल पदाधिकारी सह बाल विवाह निषेध पदाधिकारी के मार्गदर्शन में जिले की सभी 53 पंचायतों में बाल विवाह के खिलाफ विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

जिला समन्वयक अनिल कुमार ने कहा कि बाल विवाह बच्चों के अधिकार, शिक्षा और सुरक्षित भविष्य में बाधा बनता है। इसे रोकने के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। उन्होंने छात्र-छात्राओं से अपने आसपास बाल विवाह की जानकारी संबंधित अधिकारियों और संस्थाओं तक पहुंचाने तथा लोगों को जागरूक करने की अपील की। कार्यक्रम में अबू जफर आलम, आनंद मोहन कुमार, रूना कुमारी सहित विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

इस दौरान विद्यार्थियों ने न बाल विवाह करने और न होने देने का संकल्प लिया। साथ ही अपने परिवार और समाज में बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता फैलाने की शपथ भी ली।

स्वच्छता अभियान चलाएंगे पूर्व विधायक केदारनाथ

शिवहर। गांधी जयंती के अवसर पर लालगंज के पूर्व विधायक एवं शिवहर लोकसभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी तथा राजद नेता केदारनाथ प्रसाद 2 अक्टूबर को शिवहर में स्वच्छता अभियान चलाएंगे।

केदारनाथ प्रसाद ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार भी गांधी भवन, शिवहर में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करेंगे। इसके बाद खादी भंडार और देकुली धाम में स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्वच्छता, पवित्रता, सत्य, अहिंसा और दीन-दुखियों की सेवा के प्रति वे प्रतिबद्ध हैं। उनका उद्देश्य जीवन के शेष समय में समृद्ध शिवहर और सुखी शिवहरवासियों की सेवा करते हुए सामाजिक जीवन को सार्थक बनाना है। पूर्व विधायक ने बताया कि इसी संकल्प के साथ इस वर्ष भी कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने देकुली धाम सरोवर के जीर्णोद्धार में वर्ष 1962-63 के दौरान अपनी सहभागिता का उल्लेख करते हुए कहा कि शिवहर के तरियानी प्रखंड के पचरा-छतौनी गांव में उन्होंने संत प्रेम भिक्षु जी महाराज की सेवा भी की है।

मधुबनी : सरकारी भूमि की सुरक्षा को लेकर जिलाधिकारी सख्त

जन जन विचार
...✍ *प्रणय कुमार, मधुबनी*

सरकारी भूमि की सुरक्षा और संरक्षण को लेकर जिला पदाधिकारी आनंद शर्मा ने सभी विभागों के अधिकारियों को अपने-अपने विभाग से संबंधित सरकारी जमीन की नियमित निगरानी और स्थल निरीक्षण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है।

जिलाधिकारी ने कहा कि सरकारी भूमि सार्वजनिक संपत्ति है और इसकी सुरक्षा संबंधित विभागीय अधिकारियों की भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उन्होंने सभी विभागों को अपनी भूमि का अद्यतन विवरण एवं आवश्यक अभिलेख सुरक्षित रखने तथा समय-समय पर राजस्व अभिलेखों और भूमि की वास्तविक स्थिति का मिलान करने को कहा।

उन्होंने निर्देश दिया कि सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा, अतिक्रमण अथवा अनधिकृत निर्माण की जानकारी मिलते ही तत्काल वरीय अधिकारियों को सूचित कर विधिसम्मत कार्रवाई की जाए। आवश्यकता पड़ने पर संबंधित क्षेत्र का स्थल निरीक्षण भी किया जाए।

जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया कि सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करने या अतिक्रमण का प्रयास करने वालों के विरुद्ध नियमानुसार प्राथमिकी दर्ज कराने की कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, भूमि को अतिक्रमणमुक्त कराने के लिए निर्धारित प्रक्रिया के तहत अतिक्रमणवाद दायर कर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

उन्होंने कहा कि अतिक्रमण से जुड़े मामलों में किसी भी स्तर पर अनावश्यक विलंब नहीं होना चाहिए। संबंधित विभाग और अंचल प्रशासन आपसी समन्वय से मामलों का समयबद्ध निष्पादन करें।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों को सरकारी भूमि की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए प्रभावी निगरानी व्यवस्था विकसित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सरकारी संपत्ति पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण स्वीकार नहीं किया जाएगा और नियमों के अनुरूप प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

पटना में 'पुलिस दीदी' से मारपीट

जन जन विचार
...✍ *समस्तीपुर*

राजधानी पटना में गश्त के दौरान महिला पुलिसकर्मी के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। रामकृष्ण नगर थाना क्षेत्र के खेमनीचक इलाके में एक युवक द्वारा महिला पुलिसकर्मी को थप्पड़ मारने की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। घटना के बाद पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर उसकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार, सब इंस्पेक्टर प्रियंका कुमारी पांच 'पुलिस दीदियों' के साथ 'रोको-टोको' अभियान के तहत क्षेत्र में गश्त कर रही थीं। इसी दौरान सुभाष चौक के पास कुछ युवकों को रोककर पूछताछ की गई। इसी क्रम में सड़क पर मौजूद एक युवक से महिला पुलिसकर्मी की बातचीत के दौरान अचानक विवाद शुरू हो गया।

सीसीटीवी फुटेज में दिखाई दे रहा है कि महिला पुलिसकर्मी स्कूटी से उतरकर युवक से बातचीत करती हैं। कुछ ही देर में दोनों के बीच कहासुनी बढ़ जाती है और मामला हाथापाई तक पहुंच जाता है। आरोप है कि युवक ने महिला पुलिसकर्मी के साथ मारपीट की और उन्हें थप्पड़ भी मारा।

घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। महिला पुलिसकर्मी ने रामकृष्ण नगर थाने में युवक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज को जांच का आधार बनाया है और आरोपी की पहचान कर उसकी गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर छापेमारी की जा रही है।

पटना सदर के पुलिस अनुमंडल पदाधिकारी-द्वितीय मनोज कुमार ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस कार्रवाई कर रही है।

हालांकि, विवाद की वास्तविक वजह क्या थी, यह अभी स्पष्ट नहीं हो सकी है। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

नीतीश के घर बैठक...

अनुज सिंह के नामांकन को लेकर अनंत सिंह का समर्थन केवल बयान तक सीमित नहीं रहा।

मीडिया रिपोर्टों में उनके यहां लगभग 50 हजार रसगुल्ले तैयार किए जाने का भी उल्लेख है। इसके बाद नामांकन के दिन खुली जीप में अनंत सिंह और अनुज सिंह की मौजूदगी ने पूरे घटनाक्रम को प्रतीकात्मक राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का रूप दे दिया।

यह दृश्य इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि अनंत सिंह ने पहले ही कहा था कि वे पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में अनुज सिंह के समर्थन में प्रचार करेंगे।

ललन सिंह की चुप्पी पर भी सवाल



इस पूरे विवाद में वरिष्ठ जदयू नेता ललन सिंह के रुख को लेकर भी राजनीतिक चर्चा चल रही है। कुछ रिपोर्टों और विश्लेषणों ने उनकी कथित चुप्पी को पार्टी के अंदरूनी समीकरणों से जोड़कर देखा है।

लेकिन उपलब्ध सार्वजनिक जानकारी के आधार पर यह कहना उचित नहीं होगा कि ललन सिंह अनंत सिंह के कदम का समर्थन कर रहे हैं या इसके पीछे उनकी कोई राजनीतिक रणनीति है।

इसलिए फिलहाल ललन सिंह की भूमिका सवाल के रूप में है, स्थापित तथ्य के रूप में नहीं।

क्या जदयू सचमुच खतरे में है?

यहीं सबसे सावधानी से बात देखने की जरूरत है।

अनंत सिंह का खुला विरोध निश्चित रूप से जदयू के लिए गंभीर अंदरूनी चुनौती है। एक निर्वाचित विधायक का अपनी पार्टी के प्रत्याशी के खिलाफ दूसरे दल के उम्मीदवार के साथ खड़ा होना सामान्य राजनीतिक असहमति से अलग स्थिति है।

लेकिन अभी उपलब्ध घटनाक्रम से यह निष्कर्ष निकालना कि जदयू टूटने की कगार पर है, पार्टी दो हिस्सों में बंट चुकी है या नेतृत्व पर नियंत्रण समाप्त हो गया है- तथ्यों से आगे जाना होगा।

फिलहाल ज्यादा स्पष्ट संकेत यह है कि जदयू को एक साथ तीन मोर्चों पर परीक्षा का सामना करना पड़ रहा है-पार्टी अनुशासन, नेतृत्व की मध्यस्थता और चुनावी एकजुटता।

और इस परीक्षा का पहला बड़ा परिणाम 23 अक्टूबर को होने वाले विधान परिषद चुनाव के दौरान राजनीतिक रूप से दिखाई देगा। बिहार की आठ स्नातक और शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होना है।

अंबाला कैंट से सकुशल बरामद हुई चार लापता लड़कियां

शिवहर पुलिस का त्वरित एक्शन

शिवहर/तरियानी। तरियानी थाना क्षेत्र के कुशहर गांव से एक साथ चार लड़कियों के लापता होने की सूचना के बाद पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए उन्हें अंबाला कैंट से सकुशल बरामद कर लिया। पुलिस की तत्परता से परिजनों ने राहत की सांस ली है।

जानकारी के अनुसार, सोमवार को तरियानी थाना पुलिस को कुशहर गांव से चार लड़कियों के लापता होने की सूचना मिली थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तरियानी थाना कांड संख्या 285/26 दर्ज कर तत्काल जांच शुरू की। पुलिस टीम ने तकनीकी माध्यमों के साथ-साथ संभावित ठिकानों और आवागमन के साधनों की जानकारी जुटाकर तलाश शुरू की।

जांच के दौरान पुलिस को चारों लड़कियों के अंबाला कैंट में होने की जानकारी मिली। इसके बाद तरियानी थाना पुलिस ने अंबाला कैंट जीआरपी से समन्वय स्थापित किया और ट्रेनों में सघन तलाशी अभियान चलाया। लगातार प्रयासों के बाद चारों लड़कियों को सुरक्षित बरामद कर लिया गया।

पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र कुमार



सिंह ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस ने तत्काल कार्रवाई शुरू कर दी थी। सघन अनुसंधान और लगातार प्रयासों के परिणामस्वरूप चारों लड़कियों को सकुशल बरामद किया गया है।

एसपी के अनुसार, लड़कियों को शिवहर वापस लाने के लिए पुलिस टीम अंबाला भेजी गई है। पुलिस टीम उन्हें लेकर शिवहर लौट रही है। लड़कियों के बयान दर्ज करने के बाद मामले में आगे की कार्रवाई की जाएगी।

चारों लड़कियों के एक साथ लापता होने की सूचना के बाद पुलिस के सामने उन्हें जल्द से जल्द तलाशने की चुनौती थी। तरियानी पुलिस ने स्थानीय स्तर पर संभावित ठिकानों की जांच के साथ तकनीकी माध्यमों से सुराग जुटाए। अंबाला कैंट में लोकेशन की जानकारी मिलने के बाद स्थानीय रेलवे पुलिस के साथ समन्वय कर तलाशी अभियान चलाया गया और आखिरकार चारों को सुरक्षित बरामद कर लिया गया।

करीब एक साल बाद पटना लौटीं रोहिणी आचार्य

पटना। राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य करीब एक साल बाद सिंगापुर से पटना लौटीं। पटना हवाईअड्डे पर उनके पिता लालू प्रसाद यादव, मां राबड़ी देवी और बड़ी बहन मीसा भारती ने उनका स्वागत किया। कड़ी सुरक्षा के बीच उन्हें कौटिल्य नगर स्थित माता-पिता के आवास ले जाया गया। पटना पहुंचने पर रोहिणी आचार्य ने अपनी यात्रा को पारिवारिक बताते हुए कहा कि वह अपने पिता के आग्रह पर माता-पिता के साथ रहने आई हैं और उनकी यात्रा को राजनीतिक नजरिए से न देखा जाए। पिछले वर्ष तेजस्वी यादव के साथ मतभेद के बाद उन्होंने राजनीति से दूरी बनाने की बात कही थी। उनके लौटने के बाद परिवार और राजद के भीतर उनके संबंधों को लेकर फिर चर्चा शुरू हो गई है।

आपके गांव-घर की खबर

प्रेम विवाह पर विवाद, पिता ने बेटी का किया 'प्रतीकात्मक अंतिम संस्कार'

पूर्णिया। बिहार के पूर्णिया जिले के चपय गांव में अंतरजातीय प्रेम विवाह का मामला चर्चा में है। रिया गोस्वामी ने अपने घर से करीब 100 मीटर दूर रहने वाले मिलन पासवान से विवाह कर लिया। दोनों परिवारों में पहले से परिचय था और रिया रक्षाबंधन पर मिलन को राखी भी बांधती थी। समय के साथ दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ीं और उन्होंने विवाह कर लिया।

परिजनों की नाराजगी के बावजूद रिया अपने फैसले पर कायम रही। विवाह से नाराज मायके वालों ने बेटी को मृत मानते हुए उसका प्रतीकात्मक अंतिम संस्कार किया। वहीं मिलन के परिवार ने रिया का बहू के रूप में स्वागत किया। शादी के बाद मिलन रिया को मोटरसाइकिल पर बैठाकर उसके मायके के सामने से भी गुजरा। मामले को लेकर गांव में चर्चा बनी हुई है।

होटल में मिला विवाहिता का शव

मुजफ्फरपुर। सदर थाना क्षेत्र के गोबरसही चौक स्थित एक होटल के कमरे में 25 वर्षीय विवाहिता निगम कुमारी का शव फंदे से लटका मिला। वह बेगूसराय के तेघड़ा की रहने वाली और अहमदाबाद की एक रियल एस्टेट कंपनी में कार्यरत थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव बरामद कर जांच शुरू कर दी। पुलिस के अनुसार, प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, हालांकि सभी पहलुओं से जांच की जा रही है। एफएसएल टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं, जबकि होटल के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं और कर्मचारियों से पूछताछ की जा रही है।

मछली खाने के बाद विवाहिता की मौत

नवादा। बिहार के नवादा के कौआकोल में करीब 20 वर्षीय विवाहिता सविता कुमारी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मायके वालों ने पति, सास और ससुर पर प्रताड़ना और मछली में जहर देकर हत्या करने का आरोप लगाया है।

ससुराल पर जहर देने का आरोप

परिजनों के अनुसार, सविता शादी के करीब 14 महीने बाद भी ससुराल में प्रताड़ित की जा रही थी और वह गर्भवती थी। मछली खाने के बाद उसकी तबीयत अचानक बिगड़ गई। कौआकोल पीएचसी से नवादा रेफर किए जाने के बाद इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। थाना प्रभारी के अनुसार, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत की वास्तविक वजह स्पष्ट होगी। पुलिस मामले के सभी पहलुओं की जांच कर रही है।

हिंद युग्म उत्सव में 'धीरे-धीरे बस्तर' का लोकार्पण

जन जन विचार
...✍ पटना

पटना में आयोजित पांचवें हिंद युग्म उत्सव के दौरान बापू टावर में लेखक राकेश कुमार सिंह की पुस्तक 'धीरे-धीरे बस्तर' का लोकार्पण किया गया। 25 से 27 अक्टूबर 2026 तक आयोजित साहित्यिक उत्सव में देश-विदेश से आए 300 से अधिक हिंदी रचनाकारों ने हिस्सा लिया।

उत्सव के पहले दिन साहित्यप्रेमियों की मौजूदगी में पुस्तक का लोकार्पण पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. संजय पासवान, वरिष्ठ खेल पत्रकार राकेश कायस्थ, जेंडर



अध्येता रश्मि झा और हिंद युग्म के प्रधान संपादक शैलेश भारतवासी ने संयुक्त रूप से किया।

'धीरे-धीरे बस्तर' लेखक की दूसरी पुस्तक है, जो उनकी पांच वर्षों तक चली अखिल भारतीय साइकिल यात्रा 'राइड फॉर जेंडर फ्रीडम' पर आधारित है। यात्रा के दौरान उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों को करीब से देखा और वहां के समाज एवं लोगों के अनुभवों को समझने का प्रयास किया।

पुस्तक में लंबे समय से नक्सलवाद की छाया में रहे बस्तर को केवल संघर्षग्रस्त क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि वहां के आदिवासी समाज, लोकजीवन, संस्कृति, प्राकृतिक परिवेश और आम लोगों की जिजीविषा के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है।

लेखक ने यात्रा के दौरान मिले लोगों की कहानियों, संवादों और अपने अनुभवों के जरिए बस्तर की उन सामाजिक परतों को सामने रखा है, जो अक्सर समाचारों और राजनीतिक विमर्श में पीछे छूट जाती हैं।

लोकार्पण समारोह में वक्ताओं ने कहा कि देश के विभिन्न हिस्सों की यात्राएं वहां के समाज को करीब से समझने और विविध समुदायों के बीच संवाद को मजबूत करने का अवसर देती हैं। कार्यक्रम के अंत में लेखक राकेश कुमार सिंह ने उपस्थित साहित्यप्रेमियों और पाठकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

विश्व कप का शंखनाद : 14 टीमें, 57 मुकाबले

अगले साल 10 अक्टूबर को भारत और पाकिस्तान में महासंग्राम

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

क्रिकेट के सबसे बड़े महाकुंभ का मंच तैयार हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने 2027 पुरुष वनडे विश्व कप का पूरा कार्यक्रम जारी कर दिया है। दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की संयुक्त मेजबानी में होने वाला यह टूर्नामेंट 2 अक्टूबर से 21 नवंबर 2027 तक चलेगा। 14 टीमों के इस विश्व कप में कुल 57 मुकाबले 12 मैदानों पर खेले जाएंगे। खिताबी मुकाबला 21 नवंबर को जोहान्सबर्ग में होगा।

लेकिन इस विश्व कप की असली कहानी केवल भारत-पाकिस्तान मुकाबले या खिताब की जंग नहीं है। आईसीसी ने टूर्नामेंट का प्रारूप ही बदल दिया है। 2023 के 10 टीमों वाले प्रारूप की जगह अब तीन चरणों (सुपर सीरीज, ग्रुप चरण और सुपर-7) से होकर टीमों को सेमीफाइनल तक पहुंचना होगा।

भारत, पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया एक ही ग्रुप में

भारत को ग्रुप-ए में पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, जिम्बाब्वे और क्वालिफायर-ए के साथ रखा गया है। वहीं ग्रुप-बी में न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, इंग्लैंड, बांग्लादेश और क्वालिफायर-बी हैं।

यानी भारत के ग्रुप में मौजूदा विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया और चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान दोनों मौजूद हैं। भारत अपने अभियान की शुरुआत 7 अक्टूबर को केपटाउन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ करेगा। इसके तीन दिन बाद 10 अक्टूबर को जोहान्सबर्ग में भारत-पाकिस्तान मुकाबला होगा।

2 अक्टूबर से शुरू होगी पहली परीक्षा

विश्व कप का औपचारिक आगाज 2 अक्टूबर 2027 को नामीबिया की राजधानी विंडहोक में सुपर सीरीज से होगा। क्वालिफायर में दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान पर रहने वाली तीन टीमें इस चरण में राउंड-रॉबिन आधार पर खेलेंगी। इनमें शीर्ष पर रहने वाली टीम मुख्य ग्रुप चरण में पहुंचेगी, जबकि बाकी दो टीमों का अभियान समाप्त हो जाएगा।

इसके बाद 12 टीमें दो ग्रुप में बंटेंगी। प्रत्येक टीम अपने ग्रुप की बाकी पांच टीमों से एक-एक मैच खेलेगी। दोनों ग्रुप की शीर्ष तीन टीमें और दोनों ग्रुप में चौथे स्थान पर रहने वाली टीमों में बेहतर प्रदर्शन करने वाली टीम सुपर-7 में जाएगी।

ग्रुप-ए
भारत || ऑस्ट्रेलिया || पाकिस्तान || अफगानिस्तान || जिम्बाब्वे | क्वालिफायर-ए

ग्रुप-बी
न्यूजीलैंड || दक्षिण अफ्रीका || श्रीलंका || इंग्लैंड || बांग्लादेश || क्वालिफायर-बी

सुपर-7 में होगी असली अग्निपरीक्षा

सुपर-7 इस विश्व कप के प्रारूप का सबसे बड़ा बदलाव है। सात टीमें एक-दूसरे के खिलाफ खेलेंगी और इस चरण में कुल 21 मुकाबले होंगे। अंक तालिका की शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। पहले स्थान वाली टीम का सामना चौथे स्थान वाली टीम से और दूसरे स्थान वाली टीम का सामना तीसरे स्थान वाली टीम से होगा।

आईसीसी ने कुछ टीमों को सुपर-7 के लिए पहले से स्थान भी दिए हैं। भारत को ए-1, ऑस्ट्रेलिया को ए-2 और पाकिस्तान को ए-3 स्थान दिया गया है। हालांकि वास्तविक क्वालीफाइंग क्रम के अनुसार गैर-सीडेड टीम किसी स्थान को हासिल कर सकती है।

24 साल बाद अफ्रीका में लौटेगा विश्व कप

पुरुष वनडे विश्व कप 24 साल बाद अफ्रीकी धरती पर लौटेगा। दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे इससे पहले 2003 विश्व कप की मेजबानी कर चुके हैं, जबकि नामीबिया पहली बार पुरुषों के वरिष्ठ विश्व कप में मेजबान के रूप में सामने आएगा। मुकाबले दक्षिण अफ्रीका के आठ, जिम्बाब्वे के तीन और नामीबिया के एक मैदान पर होंगे।

सेमीफाइनल 17 और 18 नवंबर को केपटाउन और त्शवाने में होंगे, जबकि क्रिकेट जगत की निगाहें 21 नवंबर को जोहान्सबर्ग पर होंगी, जहां विश्व कप के नए चैंपियन का फैसला होगा।

विश्व कप 2027

आयोजन : 2 अक्टूबर-21 नवंबर 2027
मेजबान : दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया
कुल टीमें : 14 || **कुल मुकाबले :** 57 || **मैदान :**12
भारत का पहला मैच : 7 अक्टूबर, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ
भारत-पाकिस्तान मैच : 10 अक्टूबर, जोहान्सबर्ग
सेमीफाइनल : 17 और 18 नवंबर
फाइनल : 21 नवंबर, जोहान्सबर्ग
प्रारूप
सुपर सीरीज :: ग्रुप चरण :: सुपर-7 :: सेमीफाइनल :: फाइनल

वेस्टइंडीज के खिलाफ भारतीय टीम में महत्वपूर्ण बदलाव

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

वेस्टइंडीज के खिलाफ जारी वनडे सीरीज के बीच भारतीय क्रिकेट टीम में दो महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा चोट के कारण तीसरे और अंतिम वनडे से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज को भारतीय टीम में शामिल किया गया है। वहीं, आगामी पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर को टीम से बाहर कर दिया गया है और उनकी जगह नमन धीर को मौका दिया गया है।

प्रसिद्ध कृष्णा को गुवाहाटी में खेले गए दूसरे वनडे के दौरान बाएं पैर की हैमस्ट्रिंग में चोट लगी थी। वह इस मुकाबले में केवल पांच ओवर ही गेंदबाजी कर सके थे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने उनकी चोट की पुष्टि करते हुए उन्हें तीसरे वनडे से बाहर किए जाने की जानकारी दी।

प्रसिद्ध की जगह शामिल किए गए अंशुल कंबोज इस समय पुडुचेरी में ऑस्ट्रेलिया-ए के खिलाफ चार दिवसीय मुकाबला खेल रहे थे। भारतीय टीम में बुलावे के बाद उन्हें सीधे चंडीगढ़ पहुंचकर टीम से जुड़ने के लिए कहा गया है। घरेलू क्रिकेट में लगातार प्रदर्शन के बाद कंबोज के लिए यह भारतीय टीम में अपनी जगह बनाने का महत्वपूर्ण अवसर है।

भारत ने सीरीज पर किया कब्जा

वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे वनडे में भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए आठ विकेट से जीत दर्ज की थी। वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 405 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया, लेकिन भारतीय बल्लेबाजों ने लक्ष्य को महज 43.3 ओवर में दो विकेट गंवाकर हासिल कर लिया।

इस जीत के साथ भारत ने तीन मैचों की वनडे सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त बना ली है। ऐसे में तीसरा मुकाबला औपचारिकता भर जरूर है, लेकिन भारतीय टीम के लिए नए खिलाड़ियों और विकल्पों को परखने का अवसर भी होगा।

टेस्ट की तैयारी के लिए सुंदर को टी20 से हटाया

दूसरी ओर, वाशिंगटन सुंदर को टी20 टीम से बाहर किए जाने का कारण आगामी न्यूजीलैंड टेस्ट सीरीज की तैयारी बताया गया है। चयनकर्ताओं का मानना है कि सुंदर को लाल गेंद के क्रिकेट में पर्याप्त समय देना उपयोगी होगा।

11 अक्टूबर से रणजी ट्रॉफी सत्र शुरू होना है। ऐसे में सुंदर अपनी राज्य टीम तमिलनाडु के लिए रणजी मुकाबले खेलकर टेस्ट क्रिकेट की तैयारी कर सकेंगे। इसी रणनीति के तहत उन्हें वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज से बाहर रखा गया है।

सुंदर की जगह नमन धीर को भारतीय टी20 टीम में शामिल किया गया है। नमन को घरेलू क्रिकेट और सीमित ओवरों के प्रारूप में उनके प्रदर्शन के आधार पर यह अवसर मिला है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

कटघरे में चुनाव आयोग

समेत 10 देशों में पाया गया। महिलाओं में भी 90 प्रतिशत से अधिक स्वास्थ्य बोझ भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, म्यांमार और चीन सहित 10 देशों में केंद्रितरहा।

24.1 करोड़ लोग करते हैं सेवन

अध्ययन के अनुसार वर्ष 2023 में दुनिया भर में करीब 24.1 करोड़ लोग चबाने वाले तंबाकू का इस्तेमाल कर रहे थे। इनमें 60 से 64 वर्ष की आयु के लोगों में इसका सेवन सबसे अधिक पाया गया।

चिंता की बात यह है कि तंबाकू नियंत्रण के क्षेत्र में दशकों की कोशिशों के बावजूद चबाने वाले तंबाकू के इस्तेमाल का वैश्विक स्तर लगभग स्थिर बना हुआ है। इससे संकेत मिलता है कि केवल धूम्रपान पर नियंत्रण पर्याप्त नहीं है; बिना धुएं वाले तंबाकू के विभिन्न रूपों को भी जनस्वास्थ्य नीतियों के केंद्र में रखना होगा।

1990 से 2023 तक का वैश्विक अध्ययन

यह अध्ययन ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी 2023 का हिस्सा है। इसमें 1990 से 2023 तक 204 देशों और क्षेत्रों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने चबाने वाले तंबाकू से होने वाले स्वास्थ्य नुकसान को बिना धुएं वाले तंबाकू के अन्य रूपों से होने वाले नुकसान से अलग करके आकलन किया।

आंकड़ों की तस्वीर साफ है-तंबाकू का धुआं न होने का मतलब यह नहीं कि खतरा खत्म हो गया। चबाने वाले तंबाकू का व्यापक इस्तेमाल लाखों लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है और भारत उन देशों में शामिल है जहां इसका बोझ विशेष रूप से बड़ा है।

जनस्वास्थ्य के लिए बड़ी चुनौती

चबाने वाले तंबाकू की उपलब्धता, सामाजिक स्वीकार्यता और लंबे समय तक इसके सेवन की आदत इसके खिलाफ अभियान को चुनौतीपूर्ण बनाती है। ऐसे में तंबाकू नियंत्रण की रणनीति में जागरूकता, रोकथाम और प्रभावी नियंत्रण उपायों के साथ चबाने वाले तंबाकू के नुकसान को भी प्रमुखता से सामने लाना जरूरी है।

जितिया : संतान की लंबी आयु का पावन व्रत

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

भारतीय संस्कृति में व्रत और पर्व केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रहे हैं। इनके भीतर परिवार, रिश्तों, त्याग, तपस्या और लोकविश्वास की ऐसी कहानियां भी संजोई गई हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती रही हैं। जीवित्पुत्रिका व्रत, जिसे सामान्यत: जीतिया या जितिया व्रत कहा जाता है, ऐसी ही एक लोकपरंपरा है।

यह व्रत मुख्य रूप से आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को किया जाता है। मान्यता है कि माताएं अपनी संतान की दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि की कामना से यह कठिन व्रत रखती हैं। कई स्थानों पर महिलाएं पूरे दिन और रात निर्जला उपवास करती हैं तथा भगवान जीमूतवाहन की पूजा और कथा-श्रवण करती हैं।

इस व्रत से जुड़ी अनेक कथाएं प्रचलित हैं, लेकिन इनमें चील और सियारिन की कथा सबसे अधिक लोकप्रिय लोककथाओं में गिनी जाती है। इस कथा में व्रत की कठिन साधना, संकल्प की परीक्षा, कर्मफल और अंतत: पश्चाताप की कहानी एक साथ दिखाई देती है।



ममता की तपस्या का पर्व

जीतिया व्रत की सबसे बड़ी विशेषता उसकी कथाओं से आगे उसके पीछे छिपी मां की ममता है।

एक मां अपनी संतान के स्वस्थ, सुरक्षित और दीर्घ जीवन की कामना के लिए स्वयं कष्ट सहने का संकल्प लेती है। निर्जला उपवास उसी त्याग और तपस्या का प्रतीक माना जाता है।

यह पर्व केवल पूजा और उपवास की परंपरा नहीं है। यह उन लोककथाओं को भी जीवित रखता है जिनमें संयम, त्याग, परोपकार, पश्चाताप और परिवार के प्रति समर्पण जैसे मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे हैं।

चील और सियारिन की कथा जहां संकल्प और कर्मफल का संदेश देती है, वहीं जीमूतवाहन की कथा दूसरों के जीवन की रक्षा के लिए अपने सुख का त्याग करने की प्रेरणा देती है।

यही कारण है कि सदियां बीत जाने के बाद भी जीतिया व्रत लोकजीवन में अपनी विशेष पहचान बनाए हुए है।

चील और सियारिन की कथा



जितिया की पौराणिक कथा अनुसार किसी वन में एक चील और सियारिन रहती थी। दोनों में गहरी दोस्ती थी और वे हर काम को मिल-बांट के किया करती थीं। एक बार कुछ महिलाएं जंगल में आई जो जीवित्पुत्रिका व्रत की आपस में बात कर रही थीं। चील के मन में इस व्रत के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। वह महिलाओं के पास गई और उनसें व्रत के बारे में पूछने लगी। महिलाओं ने जितिया व्रत के विधान के बारे में चील को सारी जानकारी दी।

चील ने जाकर इस व्रत के बारे में अपनी मित्र सियारिन को बताया। जिसके बाद दोनों ने जितिया माता का व्रत और पूजन करने का निर्णय लिया। चील तथा सियारिन ने जितिया माता का व्रत का संकल्प लिया और शाम को पूजा की। लेकिन पूजा के बाद ही चील और सियारिन को भूख लगने लगी।

सियारिन को भूख बर्दास्त नहीं हुई और वह जंगल में शिकार करने चली गई। सियारिन जब मांस को खा रही थी, तब चील ने उसे देख लिया और उसने सियारिन की बहुत डांट लगाई। चील ने ये व्रत पूरी विधि से पूर्ण किया। फिर अगले जन्म में सियारिन और चील का जन्म बहन के रूप में, एक प्रतापी राजा के यहां हुआ। सियारिन का विवाह एक राजकुमार से हुआ और चील का विवाह राज्य मंत्री के पुत्र से हुआ।

कुछ समय बीता तो सियारिन ने एक पुत्र को जन्म दिया लेकिन जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके पुत्र की मृत्यु हो गई। इसके बाद चील ने भी एक पुत्र को जन्म दिया, जो जीवित तथा स्वास्थ्य रहा। यह देख सियारिन को अपनी बहन चील से ईर्ष्या होने लगी।

जलन में आकर सियारिन ने अपने बहन के पुत्र और पति को मरवाने की कोशिश की, परंतु दोनों ही बच गए। एक दिन देवी मां सियारिन के सपने में आई और उन्होंने सियारिन से कहा 'यह तुम्हारे पूर्व जन्म के कर्म का फल है, अगर तुम अपनी परिस्थिति ठीक करना चाहती हो तो मां जीतिया की व्रत और उपासना करो।'

प्रात: काल उठकर इस सपने के बारे में सियारिन ने अपने पति को बताया। सियारिन के पति ने यह सुन सियारिन को ये व्रत करने के लिए कहा और उसकी बहन चील से माफी मांगने को बोला। इसके बाद सियारिन चील के घर गई और उससे अपने गलतियों की माफी मांगी। सियारिन को उसकी गलतियों पर पछतावा देखकर चील ने उसे माफ कर दिया।

अगले साल जब जितिया व्रत पड़ा तो ये व्रत सियारिन और उसकी बहन चील दोनों ने एक साथ रखा। माता जितिया ने प्रसन्न होकर सियारिन को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। कुछ दिनों बाद ही सियारिन ने एक सुंदर बालक को जन्म दिया। इसके बाद दोनों बहन प्रेम भाव से खुशी-खुशी रहने लगी।

जीमूतवाहन की कथा



जीतिया व्रत से जुड़ी दूसरी प्रमुख कथा भगवान जीमूतवाहन के त्याग और परोपकार की है।

मान्यता के अनुसार, गंधर्वराज जीमूतवाहन अपना राज्य भाइयों को सौंपकर वन में चले गए थे। वन में उन्होंने देखा कि नागों और पक्षीराज गरुड़ के बीच एक समझौते के अनुसार प्रतिदिन एक नाग को गरुड़ के लिए बलि के रूप में भेजा जाता था।

एक दिन एक वृद्ध नाग माता के इकलौते पुत्र शंखचूड़ की बारी थी। पुत्र को मृत्यु के मुंह में जाता देखकर मां विलाप कर रही थी। जीमूतवाहन से यह दृश्य देखा नहीं गया। उन्होंने शंखचूड़ के स्थान पर स्वयं को प्रस्तुत कर दिया। कथा के अनुसार वे लाल वस्त्र धारण करके गरुड़ के सामने पहुंच गए और नाग युवक के प्राण बचाने के लिए अपना जीवन समर्पित करने को तैयार हो गए।

जब गरुड़ को वास्तविकता का पता चला तो वे जीमूतवाहन के त्याग और परोपकार से प्रभावित हुए। उन्होंने जीमूतवाहन को जीवनदान दिया और नागों को भी अभय प्रदान किया। इसी कथा के कारण जीमूतवाहन को त्याग, करुणा और परोपकार का प्रतीक माना जाता है।

महाभारत से भी जुड़ी है एक मान्यता



जीवित्पुत्रिका व्रत की एक अन्य मान्यता महाभारत काल की घटना से जुड़ी है। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद अश्वत्थामा ने अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में पल रहे बच्चे को ब्रह्मास्त्र से नष्ट करने का प्रयास किया। भगवान श्रीकृष्ण ने गर्भस्थ शिशु की रक्षा की और उसे जीवन प्रदान किया। वही बालक आगे चलकर राजा परीक्षित कहलाया। लोकमान्यता में उसके पुनर्जीवन की घटना को 'जीवित पुत्र' की अवधारणा से जोड़ा जाता है।



ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ
সাপ্তাহিক
জন জন বিচাৰ
Guwahati, 2 October, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, আহিন, কৃষ্ণ পক্ষ, ষষ্ঠী, শকাব্দ ১৯৪৮



বকেয়া যান-বাহনৰ জৰিমনা এতিয়া বিদ্যুৎ বিলৰ সৈতে ? উচ্চতম ন্যায়ালয়ৰ কঠোৰ পৰামৰ্শ

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

যান-বাহনৰ নিয়ম ভংগ কৰি চালান কাটি লোৱাৰ পিছত জৰিমনা নিদিয়াকৈ থাকিলে এতিয়াৰে পৰা সমস্যাৰ সন্মুখীন হ'বলগীয়া হ'ব পাৰে বাহনৰ মালিকসকল। বকেয়া ই-চালানৰ ধন আদায়ৰ ব্যৱস্থা কঠোৰ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে একাধিক গুৰুত্বপূৰ্ণ পৰামৰ্শ আগবঢ়াইছে। ইয়াৰ ভিতৰত বকেয়া যান-বাহনৰ জৰিমনা বিদ্যুৎ বিলৰ সৈতে সংযোগ কৰি আদায় কৰাৰ সম্ভাৱনাৰ কথাও আদালতে উল্লেখ কৰিছে।

ন্যায়মূৰ্তি জে বি পাৰ্দিৱালা আৰু ন্যায়মূৰ্তি কে ভি বিশ্বনাথনৰ বিচাৰপীঠে স্পষ্ট কৰে যে কেৱল হাজাৰ হাজাৰ ই-চালান জাৰি কৰিলেই নহ'ব, জৰিমনাৰ ধন আদায় কৰাটোৱেই মূল প্ৰশ্ন। আদালতৰ সন্মুখত দাখিল কৰা তথ্য অনুসৰি দেশৰ বিভিন্ন ৰাজ্য আৰু কেন্দ্ৰীয় শাসিত অঞ্চলত প্ৰায় ৪৫ হাজাৰ কোটি টকাৰ ই-চালান জাৰি কৰা হৈছে। ইয়াৰ ভিতৰত প্ৰায় ২৫ হাজাৰ কোটি টকা আদায় হৈছে যদিও প্ৰায় ২০ হাজাৰ কোটি টকা এতিয়াও বকেয়া হৈ আছে।

বিদ্যুৎ বিলৰ সৈতে চালান সংযোগৰ পৰামৰ্শ

বকেয়া চালান আদায়ৰ নতুন ব্যৱস্থা সম্পৰ্কে আলোচনা কৰি আদালতে বিদ্যুৎ বিলৰ সৈতে যান-বাহনৰ জৰিমনা সংযোগ কৰাৰ সম্ভাৱনাৰ কথাও উত্থাপন কৰে। অৰ্থাৎ, বকেয়া চালানৰ ধন আদায় নিশ্চিত কৰিবলৈ এনে ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাৰ কথা চিন্তা কৰা হৈছে, যাৰ ফলত জৰিমনা পৰিশোধৰ বাবে বাহনৰ মালিকৰ ওপৰত অধিক চাপ সৃষ্টি হ'ব পাৰে।

অৱশ্যে বিদ্যুৎ বিলত বকেয়া চালান যোগ কৰি বিদ্যুৎ সংযোগ কাটি দিয়াৰ কোনো নতুন সৰ্বভাৰতীয় নিয়ম আদালতে এতিয়ালৈকে জাৰি কৰা নাই। এইটো আদালতৰ পৰামৰ্শ বা সম্ভাব্য ব্যৱস্থাৰ অংশ হিচাপেহে উত্থাপিত হৈছে।

গাড়ীৰ পঞ্জীয়ন-মালিকানা পৰিৱৰ্তনতো বাধা

বকেয়া চালান থকা বাহনসমূহক চিহ্নিত কৰি বিভিন্ন পৰিবহণ সেৱাৰ সৈতে সংযোগ কৰাৰ বিষয়েও আদালতে গুৰুত্ব দিছে। বকেয়া জৰিমনা পৰিশোধ নকৰালৈকে-

বাহনৰ মালিকানা পৰিৱৰ্তন বন্ধ কৰা,
পঞ্জীয়ন প্ৰমাণপত্ৰ নবীকৰণত বাধা,
প্ৰদূষণ নিয়ন্ত্ৰণ প্ৰমাণপত্ৰ লাভত বাধা,
ফিটনেছ প্ৰমাণপত্ৰৰ ক্ষেত্ৰত ব্যৱস্থা,
চালকৰ অনুজ্ঞাপত্ৰ নবীকৰণত বাধা

আদি ব্যৱস্থাৰ সম্ভাৱনাৰ কথাও শুনানিত উত্থাপন কৰা হয়।

বকেয়া চালান থকা বাহনসমূহ অনলাইন পৰিবহণ ব্যৱস্থাত সহজে চিনাক্ত কৰিব পৰাকৈ তথ্য-ব্যৱস্থা উন্নত কৰাৰ কথাও আদালতে কয়। লগতে পথত আকস্মিক পৰীক্ষা বৃদ্ধি কৰাৰ পৰামৰ্শ দিয়া হৈছে, যাতে পুৰণি বকেয়া ই-চালান থকা বাহন চিনাক্ত কৰিব পৰা যায়।

দিল্লীৰ পৰিস্থিতি অধিক উদ্বেগজনক

ৰাজধানী দিল্লীৰ পৰিসংখ্যাই সমস্যাটোৰ ব্যাপকতা অধিক স্পষ্ট কৰিছে। ২৮ ছেপ্টেম্বৰ ২০২৬লৈ দিল্লীত যান-বাহনৰ চালান আৰু কেমেৰাৰ জৰিয়তে জাৰি কৰা জাননীৰ প্ৰায় ৭৩ শতাংশ বকেয়া হৈ আছে বুলি দিয়া তথ্যত প্ৰকাশ।

স্থানতে জাৰি কৰা প্ৰায় ১.৭ কোটি চালানৰ ভিতৰত ১.১ কোটি এতিয়াও বকেয়া। আনহাতে, কেমেৰাৰ জৰিয়তে জাৰি কৰা প্ৰায়



৪.৫ কোটি জাননীৰ ভিতৰত ৩.৪ কোটি পৰিশোধ হোৱা নাই।

বকেয়া চালানৰ ভিতৰত অতিৰিক্ত গতিত গাড়ী চলোৱাৰ ঘটনা সৰ্বাধিক। ইয়াৰ পিছত আছে ভুল ঠাইত গাড়ী ৰখোৱা, হেলমেট নিপিন্ধা আৰু ৰঙা সংকেত অমান্য কৰা।

কিয় বাঢ়িছে বকেয়া চালান ?

চালান পৰিশোধ নকৰাৰ আঁৰত একাধিক কাৰণ আছে। বহু লোকে লোক আদালতৰ অপেক্ষা কৰে, কাৰণ তাত কিছুমান আপোচযোগ্য চালান কম ধনত নিষ্পত্তি হোৱাৰ সুযোগ থাকে। ফলত নতুন চালান জাৰি হৈ থকাৰ বিপৰীতে পুৰণি চালানৰ সংখ্যাও বৃদ্ধি পাই থাকে। ইয়াৰ উপৰি চালানৰ বাৰ্তা সময়মতে নোপোৱা, অনলাইন পৰিশোধৰ সময়সীমা, তাৎক্ষণিকভাৱে ধন পৰিশোধ কৰিব নোৱাৰা আদি সমস্যাইও বকেয়া বৃদ্ধি কৰে।

দিল্লীত ডিজিটেল পৰিশোধ ব্যৱস্থা শক্তিশালী

চালান আদায়ৰ সমস্যা সমাধানৰ বাবে দিল্লী যান-বাহন আৰক্ষীয়ে ইতিমধ্যে ডিজিটেল ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰিছে। ২০২৫ চনৰ ছেপ্টেম্বৰত ই-চালান ব্যৱস্থাক ভাৰত বিল পৰিশোধ ব্যৱস্থাৰ সৈতে সংযোগ কৰা হৈছিল। ইয়াৰ ফলত ইউপিআইসহ বিভিন্ন ডিজিটেল মাধ্যমত পুৰণি আৰু আপোচযোগ্য চালান পৰিশোধৰ সুবিধা সৃষ্টি হৈছে।

হোৱাটছএপৰ জৰিয়তেও নাগৰিকক চালানৰ তথ্য জনোৱা হৈছে। ইয়াৰ ফলত চালান পৰিশোধৰ হাৰ বৃদ্ধি পোৱাৰ দাবী কৰা হৈছে। লোক আদালত, সন্ধিয়াৰ আদালত আৰু সপ্তাহান্তৰ শুনানি বৃদ্ধি কৰাৰ জৰিয়তেও বকেয়া গোচৰ কমোৱাৰ চেষ্টা চলিছে।

আদালতৰ বার্তা স্পষ্ট-চালান কাটি থোৱাই যথেষ্ট নহয়

উচ্চতম ন্যায়ালয়ৰ এই পৰ্যবেক্ষণে দেশত যান-বাহন নিয়ম ভংগৰ বিৰুদ্ধে জৰিমনা আদায় ব্যৱস্থাক নতুন ৰূপ দিয়াৰ সম্ভাৱনা সৃষ্টি কৰিছে। কিন্তু বিদ্যুৎ বিলৰ সৈতে যান-বাহনৰ জৰিমনা সংযোগ কৰাৰ ধাৰণাই একে সময়তে ব্যক্তিগত জৰিমনা আৰু পৰিয়াল বা বাসগৃহৰ বিদ্যুৎ সংযোগৰ মাজৰ সম্পৰ্কক লৈ বহু ব্যৱহাৰিক প্ৰশ্নও উত্থাপন কৰিছে। ভাড়া ঘৰত থকা লোক, যৌথ বিদ্যুৎ সংযোগ, বাহন বিক্ৰী কৰাৰ পিছত পুৰণি চালান, আৰু বাহন আৰু বিদ্যুৎ সংযোগৰ মালিক পৃথক হোৱা আদি ক্ষেত্ৰত কেনেদৰে এই ব্যৱস্থা কাৰ্যকৰী হ'ব-সেই প্ৰশ্নৰ উত্তৰ এতিয়াও স্পষ্ট নহয়। এতিয়া মূল লক্ষ্য কেৱল চালান জাৰি কৰা নহয়; বকেয়া জৰিমনা কেনেদৰে ন্যায়সংগত, কাৰ্যকৰী আৰু নাগৰিকৰ অধিকাৰ সুৰক্ষিত ৰাখি আদায় কৰা যায়, সেই ব্যৱস্থাই হ'ব পৰৱৰ্তী ডাঙৰ প্ৰশ্ন।

প্ৰধানমন্ত্ৰী তাৰেক ৰহমানৰ চৰকাৰক উৎখাতৰ ষড়যন্ত্ৰ

জন জন বিচাৰ
...ঢাকা

শেখ হাছিনা চৰকাৰৰ পতনৰ দুবছৰ নৌহওঁতেই বাংলাদেশত পুনৰ সামৰিক হস্তক্ষেপৰ সম্ভাৱনাক লৈ ৰাজনৈতিক আৰু নিৰাপত্তা মহলত চৰ্চা আৰম্ভ হৈছে। একাধিক প্ৰতিবেদনৰ উদ্ধৃতি দি দাবী কৰা হৈছে যে প্ৰধানমন্ত্ৰী তাৰেক ৰহমান নেতৃত্বাধীন বিএনপি চৰকাৰক দুৰ্বল কৰি দেশখনত এখন 'অৰাজনৈতিক' চৰকাৰ প্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে গোপন পৰিকল্পনা চলি আছে। এই পৰিকল্পনাত বাংলাদেশৰ কিছুমান সামৰিক আৰু অসামৰিক ব্যক্তিৰ লগতে পাকিস্তানৰ চোৰাংচোৰা সংস্থা আইএছআই আৰু তুৰস্কৰ সৈতে সম্পৰ্ক থকা ব্যক্তিৰ নামো উত্থাপিত হৈছে।

অৱশ্যে এই দাবীসমূহৰ বহু অংশ এতিয়ালৈকে স্বাধীনভাৱে নিশ্চিত হোৱা নাই। বাংলাদেশ চৰকাৰ, সেনাবাহিনী অথবা পাকিস্তান আৰু তুৰস্কৰ সংশ্লিষ্ট কৰ্তৃপক্ষৰ পৰা এনে অভ্যুত্থান পৰিকল্পনাৰ বিষয়ে কোনো নিৰ্ভৰযোগ্য ৰাজহুৱা নিশ্চিতকৰণ পোৱা নগলে এই অভিযোগসমূহক দাবী হিচাপেই বিবেচনা কৰিব লাগিব।

সেনাৰ উচ্চপদস্থ বিষয়াৰ সৈতে গোপন বৈঠকৰ দাবী

'নৰ্থ ইষ্ট নিউজ'ৰ এক প্ৰতিবেদনৰ উদ্ধৃতি দি দাবী কৰা হৈছে যে ২২ আৰু ২৩ ছেপ্টেম্বৰত মেজৰ জেনেৰেল মাহ বুবুল আলমৰ সৈতে কেইবাখনো গোপন বৈঠক অনুষ্ঠিত হৈছিল। মাহবুবুল আলম বাংলাদেশ ইউনিভাৰ্চিটি অৰ প্ৰফেছনেলছৰ উপাচাৰ্য; এই প্ৰতিষ্ঠানটো বাংলাদেশ সেনাৰ পৰিচালনাৰ সৈতে জড়িত।

প্ৰতিবেদনটোত দাবী কৰা হৈছে যে এই বৈঠকসমূহত 'আমাৰ দেশ'ৰ সম্পাদক মাহমুদুৰ ৰহমান আৰু অৱসৰপ্ৰাপ্ত সেনা বিষয়া হাছিনুৰ ৰহমানো উপস্থিত আছিল। তুৰস্কৰ চোৰাংচোৰা সংস্থাৰ এজন জ্যেষ্ঠ বিষয়াও বৈঠকত উপস্থিত থকাৰ দাবী কৰা হৈছে।

অভিযোগ অনুসৰি, এখন দীঘলীয়া সময়ৰ বাবে চলিব পৰা 'অৰাজনৈতিক চৰকাৰ' গঠনৰ সম্ভাব্য ৰোডমেপক লৈ আলোচনা হৈছিল। এই পৰিকল্পনাৰ লক্ষ্য বিএনপি আৰু নিষিদ্ধ আৱামী লীগ-বাংলাদেশৰ দুটা প্ৰধান ৰাজনৈতিক শক্তিকে দুৰ্বল কৰা বুলিও প্ৰতিবেদনটোত দাবী কৰা হৈছে।

আইএছআইৰ দুই বিষয়াৰ বাংলাদেশ ভ্ৰমণক লৈও প্ৰশ্ন

আন এটা গুৰুতৰ দাবী হৈছে পাকিস্তানৰ আন্তঃসেৱা চোৰাংচোৰা সংস্থা-আইএছআইৰ দুজন জ্যেষ্ঠ বিষয়াই গোপনে বাংলাদেশ ভ্ৰমণ কৰিছিল। প্ৰতিবেদন অনুসৰি মেজৰ মহম্মদ আক্ৰম আৰু মেজৰ আজিজ বুটাৰীয়ে প্ৰায় ১০ দিন বাংলাদেশত থাকি চট্টগ্ৰামসহ কেইবাটাও স্থান ভ্ৰমণ কৰে আৰু নিৰাপত্তা সম্পৰ্কীয় বিষয়ত বাংলাদেশৰ সেনাৰ কিছুমান জ্যেষ্ঠ বিষয়াৰ সৈতে বৈঠক কৰে।

২৫ ছেপ্টেম্বৰত বাংলাদেশ এৰাৰ পূৰ্বে তেওঁলোকে মাহমুদুৰ আজমী আৰু হাছিনুৰ ৰহমানৰ সৈতেও সাক্ষাৎ কৰাৰ দাবী কৰা হৈছে।

কিন্তু এই ভ্ৰমণৰ উদ্দেশ্য, বৈঠকৰ বিষয়বস্তু আৰু আইএছআইৰ সৈতে ইয়াৰ প্ৰকৃত সম্পৰ্কৰ বিষয়ে কোনো স্বতন্ত্ৰ আৰু নিৰ্ভৰযোগ্য চৰকাৰী নিশ্চিতকৰণ প্ৰকাশ পোৱা নাই।

-১৩ পৃষ্ঠাত

নিৰ্মাণৰ সময়তে বিধ্বস্ত নাজিৰাৰ ঐতিহাসিক ববআলি, পথ অৱৰোধেৰে ৰাইজৰ প্ৰতিবাদ

জন জন বিচাৰ
...✍নয়নমণি ফুকন
নাজিৰা



নিৰ্মাণ আৰম্ভ কৰাৰ প্ৰায় দুবছৰ পাছতো সম্পূৰ্ণ নোহোৱা জয়সাগৰ-নাজিৰা পথৰ দুৰৱস্থাক লৈ নাজিৰাত ৰাইজে তীব্ৰ প্ৰতিবাদ সাব্যস্ত কৰে। নাজিৰা চাৰিআলিৰ সমীপত লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা পথৰ সংযোগস্থলত প্ৰায় ৪০০ লোক সমবেত হৈ পথ অৱৰোধ কৰে। ফলত প্ৰায় চাৰি ঘণ্টা ধৰি ববআলিত দুই শতাধিক যান-বাহনৰ চলাচল ব্যাহত হয়।

প্ৰায় ৯৯ কোটি টকা ব্যয়েৰে নিৰ্মাণৰত প্ৰায় ১৩ কিলোমিটাৰ দৈৰ্ঘ্যৰ পথটোৰ নাজিৰা চাৰিআলিৰ পৰা নমাটি তিনিআলিলৈকে প্ৰায় আঢ়ৈ কিলোমিটাৰ অংশ দীঘলীয়া সময় ধৰি বিধ্বস্ত হৈ পৰি আছে। অভিযোগ অনুসৰি, ঠিকাদাৰী প্ৰতিষ্ঠানে পুৰণি পথ খান্দি পেলোৱাৰ পাছত প্ৰায় আঠ মাহ ধৰি কাম বন্ধ কৰি থোৱাত বাৰিষাত পথছোৱা বোকাময় আৰু গাঁত-গহ্বৰেৰে ভৰি পৰে। শুকান বতৰত সৃষ্টি হোৱা প্ৰচণ্ড ধূলিৰ বাবেও পথচাৰী আৰু স্থানীয় বাসিন্দাই সমস্যাৰ সম্মুখীন হবলগীয়া হৈছে।

প্ৰতিবাদৰ সময়ত ৰাইজে "পি ডব্লিউ ডি গ বেক" আৰু "পি ডব্লিউ ডিৰ ঠিকাদাৰ গ বেক" আদি শ্লোগান দি ক্ষোভ প্ৰকাশ কৰে। প্ৰতিবাদকাৰীসকলে ঘটনাস্থলীত উপস্থিত হোৱা ঠিকাদাৰক কাম কেতিয়াৰ পৰা আৰম্ভ কৰিব আৰু ৰাইজৰ দুৰ্ভোগ কেতিয়া শেষ হব বুলি প্ৰশ্ন কৰি জবাবদিহি কৰে।

পিছত নাজিৰাৰ উপ-জিলা আয়ুক্ত প্ৰতিভা মেধ্ৰাম আৰু সহ কাৰী আয়ুক্ত অৰুণাভ সোণোৱাল ঘটনাস্থলীত উপস্থিত হৈ প্ৰতিবাদকাৰীসকলৰ সৈতে আলোচনা কৰে। ঠিকাদাৰে এতিয়াৰ পৰা প্ৰতিদিনে তিনিবাৰ পথত পানী ছটিওৱাৰ ব্যৱস্থা কৰাৰ প্ৰতিশ্ৰুতি দিয়ে। আনহাতে, উপ-জিলা আয়ুক্তগৰাকীয়ে ৬ অক্টোবৰৰ পৰা পথ নিৰ্মাণৰ কাম পুনৰ আৰম্ভ হব বুলি ঘোষণা কৰে।

ৰাইজে ৬ অক্টোবৰৰ পৰা কাম আৰম্ভ নকৰিলে ৭ অক্টোবৰৰ পুৰাৰে পৰা পুনৰ পথ অৱৰোধ কৰাৰ হুংকাৰ দিয়ে। ইয়াৰ বিপৰীতে প্ৰতিশ্ৰুতি ভংগ হলে ঠিকাদাৰক কলা তালিকাভুক্ত কৰাৰ আশ্বাস দিয়ে উপ-জিলা আয়ুক্তগৰাকীয়ে।

প্ৰতিবাদৰ মাজতে শাসকীয় দলৰ নাজিৰা পৌৰসভাৰ দুগৰাকী পৌৰ সদস্যাই বিজেপি চৰকাৰৰ বিৰুদ্ধে শ্লোগান নিদি বলৈ আন্দোলনকাৰীসকলক সতৰ্ক কৰি দিয়া ঘটনাইও চৰ্চা লাভ কৰে।

নাজিৰা সমজিলাত দুৰ্গা পূজাৰ প্ৰস্তুতি সন্দৰ্ভত প্ৰশাসনৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ বৈঠক

জন জন বিচাৰ
...✍নিজিৰা



সমাগত দুৰ্গা পূজা সুশৃংখল, নিৰাপদ আৰু শান্তিপূৰ্ণভাৱে অনুষ্ঠিত কৰাৰ লক্ষ্যৰে নাজিৰা সমজিলা প্ৰশাসনৰ উদ্যোগত এখন গুৰুত্বপূৰ্ণ বৈঠক অনুষ্ঠিত হয়। সমজিলা আয়ুক্ত প্ৰতিভা মেধ্ৰামৰ অধ্যক্ষতাত সমজিলা আয়ুক্ত কাৰ্যালয়ৰ সভাকক্ষত অনুষ্ঠিত বৈঠকত পূজা উদযাপনৰ বিভিন্ন দিশ সন্দৰ্ভত বিস্তৃত আলোচনা কৰা হয়।

বৈঠকৰ আৰম্ভণিতে সহকাৰী আয়ুক্ত অৰুণাভ সোণোৱালে বিগত বছৰৰ কাৰ্যবিৱৰণী পাঠ কৰে। ইয়াৰ পাছতে পূজা সমিতি সমূহৰ প্ৰয়োজনীয় অনুমতি, যান-বাহন নিয়ন্ত্ৰণ, পাৰ্কিং, পূজা মণ্ডপৰ নিৰাপত্তা, পোহৰৰ ব্যৱস্থা, অগ্নি নিৰাপত্তা, দুৰ্যোগ ব্যৱস্থাপনা আৰু প্ৰতিমা বিসৰ্জনকে ধৰি বিভিন্ন বিষয় আলোচনা কৰা হয়।

প্ৰশাসনে পূজা সমিতিসমূহক অসম আৰক্ষীৰ 'সেৰা সেঁতু' পৰ্টেলৰ জৰিয়তে আগতীয়াকৈ অনলাইন আবেদন কৰাৰ লগতে সংশ্লিষ্ট বিভাগসমূহৰ পৰা প্ৰয়োজনীয় অনুমতি সংগ্ৰহ কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিছে। সকলো প্ৰয়োজনীয় নথি-পত্ৰ ১২ অক্টোবৰৰ ভিতৰত নাজিৰা সমজিলা আয়ুক্তৰ কাৰ্যালয়ত জমা দিব লাগিব।

পূজা মণ্ডপ আৰু ইয়াৰ চৌপাশত পৰ্যাপ্ত পোহৰৰ ব্যৱস্থা কৰাৰ লগতে অগ্নিকাণ্ডকে ধৰি জৰুৰীকালীন পৰিস্থিতিৰ বাবে অগ্নি নিৰ্বাপক সঁজুলি সাজু কৰি ৰখাৰ নিৰ্দেশ দিয়া হয়। লগতে আৰক্ষী, অগ্নি নিৰ্বাপক বাহিনী, জিলা দুৰ্যোগ ব্যৱস্থাপনা নিয়ন্ত্ৰণ কক্ষ, এপিডিচিএল, অসামৰিক প্ৰতিৰক্ষা আৰু চিকিৎসালয়ৰ জৰুৰীকালীন যোগাযোগ নম্বৰ প্ৰশাসনক যোগান ধৰিবলৈ কোৱা হয়।

পূজা মণ্ডপত পৰিত্যক্ত বা গৰাকীবিহীন বেগ, সন্দেহজনক ব্যক্তি অথবা কোনো সন্দেহজনক গতিবিধি লক্ষ্য কৰিলে তৎক্ষণাত আৰক্ষীক অৱগত কৰিবলৈ আহ্বান জনোৱা হয়। প্ৰতিটো পূজা মণ্ডপত পৰ্যাপ্ত স্বেচ্ছাসেৱক নিয়োগ কৰি তেওঁলোকক দায়িত্ব সম্পৰ্কে আগতীয়াকৈ অৱগত কৰাৰ লগতে নিশাৰ সময়তো মণ্ডপৰ নিৰাপত্তা নিশ্চিত কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিয়া হয়।

প্ৰতিমা বিসৰ্জনৰ ক্ষেত্ৰতো সকলো প্ৰয়োজনীয় সাৱধানতা অৱলম্বন কৰি নিৰ্ধাৰিত সময়ৰ ভিতৰত প্ৰতিমা বিসৰ্জন ঘাটলৈ নিয়াৰ ব্যৱস্থা কৰিবলৈ পূজা সমিতিসমূহক আহ্বান জনায় সমজিলা আয়ুক্ত প্ৰতিভা মেধ্ৰামে। শান্তি-শৃংখলা বজাই ৰাখি প্ৰশাসনৰ সকলো নীতি-নিৰ্দেশনা পালন কৰি দুৰ্গা পূজা সফলভাৱে অনুষ্ঠিত কৰাত সকলোৰে সহযোগিতা কামনা কৰে তেওঁ।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

২ অক্টোবৰ ২০২৬ৰ পৰা ৮ অক্টোবৰ ২০২৬ লৈ

মেষ : ঘৰুৱা ক্ষেত্ৰত মনোনিবেশ থাকিব। মানসিক খাম খেয়ালি থাকিব পাৰে। কৰ্ম্মৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল।

বৃষ: আৰ্থিক বাধাৰ সন্মুখীন হব পাৰে। অযথা চেষ্টাৰ ফলত মানসিক অশান্তি আহিব পাৰে। মাতৃৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হব।

মিথুন: আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। কঠোৰ বাক্য বানৰ প্ৰতি সচেতন হব। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব।

কৰ্কট: শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। আপুষ্টিকৰ খাদ্যৰ পৰা সাৱধান হব। চেষ্টাৰ ক্ষেত্ৰত বাধাৰ সৃষ্টি হব পাৰে।

সিংহ: আধ্যাত্মিক দিশত মনোনিৱেশ থাকিব। কৌতুহল মূলক মানসিক স্থিতি আহিব পাৰে। ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাবনা আছে।

কন্যা : সমাজিক কাৰ্য্যত বাধাৰ সন্মুখীন হব পাৰে। আধ্যাত্মিক ক্ষেত্ৰৰ পৰা মানসিক শান্তি। কৰ্ম্মৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

তুলা: কৰ্ম্মৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। সামাজিক ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। বৈদেশিক ক্ষেত্ৰৰ লগত জৰিত কাৰ্য্যৰ পৰা লাভ।

বৃশ্চিক: ধৰ্মীয় ক্ষেত্ৰত মনোনিবেশ থাকিব। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ। কৰ্মক্ষেত্ৰত সুস্থিৰতা বৃদ্ধি।

ধনু : আকস্মিক কোনো শুভ সংবাদ আহিব পাৰে। পিতৃৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হব। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ।

মকৰ: ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ। আকস্মিক কোনো আত্মীয় স্বজনৰ লগত মনোমালিন্য ঘটিব পাৰে। ধৰ্মীয় কাৰ্য্যৰ পৰা মানসিক শান্তি।

কুম্ভ : কাৰ্যক্ষমতাৰ সমাদৰ লাভ। বাৰ্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। শাৰীৰিক ক্ষেত্ৰত শুভ।

মীন: মানসিক সুখ শান্তি বৃদ্ধি। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ ফল। আদাৰকাৰি কাৰ্য্যত সময় অপচয় হব পাৰে।

- **হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী**
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

যোৰহাটত শিশু সুৰক্ষা ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰাৰ বৃহৎ পদক্ষেপ

জন জন বিচাৰ
...যোৰহাট



শিশুৰ সুৰক্ষা আৰু কল্যাণৰ ক্ষেত্ৰত বিভিন্ন চৰকাৰী বিভাগ আৰু অংশীদাৰসকলৰ মাজত সমন্বয় অধিক শক্তিশালী কৰাৰ লক্ষ্যৰে যোৰহাটত 'কৰচ-সুৰক্ষিত শৈশৱ, সমৃদ্ধ ভাৰত' কাৰ্যসূচীৰ জিলা পৰ্যায়ৰ শুভাৰম্ভ অনুষ্ঠান অনুষ্ঠিত হয়।

যোৰহাট জিলা প্ৰশাসনৰ তত্ত্বাৱধানত আৰু জিলা শিশু সুৰক্ষা গোটৰ সহযোগত নৰ্থ ইষ্ট চেণ্টাৰ ফৰ ইকুইটি একচন অন ইন্টিগ্ৰেটেড ডেভেলপমেণ্ট আৰু ব্ৰিটিছ এচিয়ান ট্ৰাষ্টৰ যৌথ উদ্যোগত এই অনুষ্ঠান আয়োজন কৰা হয়।

কেন্দ্ৰীয় মহিলা আৰু শিশু বিকাশ মন্ত্ৰালয়ৰ 'মিছন বাৎসল্য' আঁচনিৰ সৈতে সংগতি ৰাখি অনুষ্ঠিত কাৰ্যসূচীত বাল্যবিবাহ, শিশু ভ্ৰম্ৰমিক, বিদ্যালয় ত্যাগ, শিশু নিৰ্যাতন, শোষণ আৰু মানৱ সৱৰাহ দৰে সমস্যাসমূহ মোকাবিলা কৰাৰ ক্ষেত্ৰত বিভাগসমূহৰ মাজত সমন্বিত ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হয়।

কৰচ কাৰ্যসূচীৰ ৰাজ্যিক নেতৃত্ব নৱনীতা গোস্বামীয়ে কাৰ্যসূচীটোক দীৰ্ঘম্যাদী ব্যৱস্থা হিচাপে উল্লেখ কৰি শিশুৰ বাবে সুৰক্ষিত পৰিৱেশ সৃষ্টি কৰাৰ লগতে শিশুৰ সুৰক্ষাৰ সৈতে জড়িত প্ৰথম শাৰীৰ কৰ্মীসকলৰ দক্ষতা আৰু সক্ষমতা বৃদ্ধিৰ প্ৰয়োজনীয়তাৰ বিষয়ে উল্লেখ কৰে।

জিলা আয়ুক্ত জয় শিৱানীৰ পৌৰোহিত্যত অনুষ্ঠিত অনুষ্ঠানটোত জিলা পৰিষদৰ উপ-মুখ্য কাৰ্যবাহী বিষয়া, অতিৰিক্ত জিলা আয়ুক্ত শচসমাজ কল্যাণ আৰু জিলা শিশু সুৰক্ষা বিষয়া উপস্থিত থাকে। ইয়াৰ উপৰি আৰক্ষী, স্বাস্থ্য, শিক্ষা, শ্ৰম, সমাজ কল্যাণ, জিলা আইন সেৱা প্ৰাধিকৰণ, শিশু ন্যায় ব'ৰ্ড, শিশু কল্যাণ সমিতি, পঞ্চায়ত আৰু গ্ৰামোন্নয়ন ব্যৱস্থা, খণ্ড উন্নয়ন বিষয়া আৰু শিশু উন্নয়ন প্ৰকল্প বিষয়াসকলৰ প্ৰতিনিধিয়েও অংশগ্ৰহণ কৰে।

অনুষ্ঠানটোৰ সফল ৰূপায়ণত নৰ্থ ইষ্ট চেণ্টাৰ ফৰ ইকুইটি একচন অন ইন্টিগ্ৰেটেড ডেভেলপমেণ্টৰ যোৰহাট জিলা কৰচ দলে সক্ৰিয় ভূমিকা পালন কৰে।

অনুষ্ঠানৰ জৰিয়তে জিলাখনত শিশু সুৰক্ষা ব্যৱস্থাক অধিক সমন্বিত, সক্ৰিয় আৰু সঁহাৰিমূলক কৰি তোলাৰ লগতে জিলা, খণ্ড আৰু গাঁও পৰ্যায়ত ইতিমধ্যে থকা শিশু সুৰক্ষা ব্যৱস্থাসমূহ অধিক শক্তিশালী কৰাৰ বাবে সংশ্লিষ্ট সকলো পক্ষৰ মাজত সহযোগিতা অব্যাহত ৰখাৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হয়।

নাজিৰাত অ'এনজিচিৰ বিৰুদ্ধে গণ সংগঠনসমূহৰ অৱস্থান ধৰ্মঘট

জন জন বিচাৰ
...নাজিৰা

অ'এনজিচিৰ অসম সম্পদত থলুৱা নিবনুৱাৰ নিযুক্তি, তৈলক্ষেত্ৰ ব্যক্তিগতকৰণ বন্ধ কৰা আৰু বানপীড়িত লোকসকলক আৰ্থিক সাহায্য প্ৰদানৰ দাবীত শিৱসাগৰ জিলা গণ সংগঠনসমূহৰ যৌথ সংগ্ৰামী মঞ্চই নাজিৰাস্থিত অ'এনজিচিৰ মুখ্য কাৰ্যালয়ৰ সম্মুখত অৱস্থান ধৰ্মঘট কাৰ্যসূচী ৰূপায়ণ কৰে।

নিখিল ভাৰত যুৱ ফেডাৰেচন, নিখিল ভাৰত ছাত্ৰ ফেডাৰেচন, শ্ৰমিক মহাসভা, কৃষক সভা, অসম মহিলা সংঘ আৰু কৃষি শ্ৰমিক সংঘৰ উদ্যোগত অনুষ্ঠিত প্ৰতিবাদী কাৰ্যসূচীত সংগঠনসমূহৰ নেতা-কৰ্মীসকলে অংশগ্ৰহণ কৰে।

প্ৰতিবাদকাৰীসকলে অভিযোগ কৰে যে অসম সম্পদত তেল আৰু প্ৰাকৃতিক গেছৰ যথেষ্ট সম্ভাৱনা থকাৰ পাছতো উৎপাদন বৃদ্ধিৰ বাবে প্ৰয়োজনীয় আধুনিক প্ৰযুক্তি আৰু নিজা ৰিগ ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰত অ'এনজিচিয়ে পৰ্যাপ্ত পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰা নাই। লগতে লাভজনক গেলেকী তৈলক্ষেত্ৰসহ অসম সম্পদৰ বিভিন্ন তৈলক্ষেত্ৰ আৰু ৰিগ ব্যক্তিগত খণ্ডলৈ হস্তান্তৰৰ প্ৰচেষ্টাৰো বিৰোধিতা কৰে সংগঠনসমূহে।

প্ৰতিবাদী সভাত চি পি আইৰ অসম ৰাজ্যিক পৰিষদৰ সম্পাদক কনক গগৈসহ কেইবাগৰাকী বক্তাই বক্তব্য আগবঢ়াই অ'এনজিচিৰ নীতিৰ সমালোচনা কৰে। তেওঁলোকে অসম সম্পদত থলুৱা নিবনুৱা যুৱক-যুৱতীৰ বাবে কৰ্মসংস্থাপনৰ সুযোগ বৃদ্ধি কৰাৰ দাবী জনায়।

প্ৰতিবাদকাৰীসকলে গেলেকী তৈলক্ষেত্ৰৰ ব্যক্তিগতকৰণ বন্ধ কৰা, অসম সম্পদৰ তৈলক্ষেত্ৰ আৰু ৰিগ ব্যক্তিগতকৰণ বন্ধ কৰা, খালী পদত থলুৱা নিবনুৱাক নিযুক্তি দিয়া আৰু উৎপাদন বৃদ্ধিৰ বাবে উন্নত প্ৰযুক্তিৰ নিজা ৰিগ ক্ৰয় কৰা আদি দাবী উত্থাপন কৰে।

ইয়াৰ উপৰি শিৱসাগৰ, চৰাইদেউ আৰু যোৰহাট জিলাত বানপানীয়ে ব্যাপক ক্ষতি কৰাৰ কথা উল্লেখ কৰি বানপীড়িত লোকসকলক সাহায্য আৰু ক্ষতিগ্ৰস্ত বাট-পথ পুনৰ নিৰ্মাণৰ বাবে ৫০০ কোটি টকাৰ আৰ্থিক সাহায্য প্ৰদানৰ দাবী জনোৱা হয়। অৱশেষত প্ৰতিবাদকাৰী সংগঠনসমূহৰ বিষয়ৱবীয়াসকলে অ'এনজিচিৰ অধ্যক্ষলৈ অসম সম্পদৰ কাৰ্যবাহী সঞ্চালকৰ জৰিয়তে এখন স্মাৰকপত্ৰ প্ৰদান কৰে।

হৰেন চন্দ্ৰ নাথলৈ 'বিপিন বৰগোহাঁই আৰু অনুপমা গগৈ বৰগোহাঁই সাহিত্য-সংস্কৃতি ন্যাস বঁটা'

জন জন বিচাৰ
...নাজিৰা



নাজিৰাৰ জতকীয়া নাথ গাঁৱৰ বিশিষ্ট লেখক তথা সাহিত্য-সংগঠক হৰেন চন্দ্ৰ নাথলৈ শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱৰ সংঘৰ জোকতলি আঞ্চলিক শাখাৰ ২০২৬ বৰ্ষৰ 'বিপিন বৰগোহাঁই আৰু অনুপমা গগৈ বৰগোহাঁই সাহিত্য-সংস্কৃতি ন্যাস বঁটা' আগবঢ়োৱা হৈছে।

আহা ৪ অক্টোবৰত মঠিয়াছিগা মহনগাঁৱৰ গুৰুগৃহত অনুষ্ঠিত হ'বলগীয়া মহাপুৰুষ শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱৰ ৫৭৮ সংখ্যক আবিৰ্ভাৱ মহোৎসৱৰ মুকলি সভাত হৰেন চন্দ্ৰ নাথক এই বঁটা প্ৰদান কৰা হ'ব। জোকতলি আঞ্চলিক শাখাৰ চতুৰ্থ কাৰ্যনিৰ্বাহক সভাত নাথক এই বঁটাৰ বাবে নিৰ্বাচিত কৰা হয় বুলি জানিব পৰা গৈছে।

আশী-নব্বৈৰ দশকৰ পৰাই নিৰবচ্ছিন্নভাৱে সাহিত্য চৰ্চা কৰি অহা নাথৰ ইতিমধ্যে 'আকৌ এবাৰ বসন্ত', 'নিশব্দ সমস্বৰ', 'প্ৰাণ গংগাৰ লহৰ', 'অস্থিৰ ছবিৰ স্থিৰতা', 'চিন্তাৰ ৰূপছায়া', 'সাহিত্যৰ বৰ্ণ সুৰভি', 'ক্তস্তলেখা', 'অধ্যাপক ডম্বৰু কাকতি', 'অধ্যাপক কৃষ্ণ কুমাৰ মিশ্ৰ' আৰু 'কাগজৰ মন আৰু সন্ধিৰ বাঁহ' আদি দহখন একক মৌলিক গ্ৰন্থ প্ৰকাশ পাইছে। ইয়াৰ উপৰি তেওঁ কুৰিখনৰো অধিক গ্ৰন্থ সম্পাদনা কৰিছে।

অসম সাহিত্য সভাৰ আজীৱন সভ্য নাথে শিৱসাগৰ জিলা সাহিত্য সভাৰ বাৰ্তা দুটা কাৰ্যকাল সম্পাদনা কৰাৰ লগতে নাজিৰা কবি সম্মিলনৰ কাব্য পত্ৰিকা 'প্ৰতীতি' আৰু শিৱসাগৰ জিলা কবি সম্মিলনৰ 'কাব্যগুঞ্জন' সম্পাদনাৰ সৈতেও জড়িত। ২০২১ চনত অসম চৰকাৰৰ উচ্চশিক্ষা বিভাগৰ 'লেখক গৌৰৱ' আৰু ২০২৪ চনত সদৌ অসম কবি সম্মিলনৰ 'তৰুণ কোঁৱৰ কাব্য বঁটা' লাভ কৰা নাথে 'অসম আদিত্য' কাকতকে ধৰি বিভিন্ন বাতৰি কাকতত নিয়মীয়াকৈ স্তম্ভ আৰু নিবন্ধ লিখি আহিছে।

দীৰ্ঘদিন সাংবাদিকতাৰ সৈতেও জড়িত নাথ শলগুৰি মুকুল সাহিত্য সভাৰ প্ৰাক্তন সভাপতি আৰু নাজিৰা কবি সম্মিলনৰ প্ৰাক্তন সম্পাদক। 'ৰংপুৰীয়া গল্পকাৰৰ মঞ্চ-শিপা'ৰ যুটীয়া সম্পাদক হিচাপে সাতখন গল্পগ্ৰন্থ সম্পাদনা কৰি অসমীয়া গল্প সাহিত্যলৈও অৱদান আগবঢ়াইছে। 'ইপ্ৰ' বুকছ্ প্ৰিণ্ট ইউনিক'ৰ জৰিয়তে তেওঁ বিভিন্ন লেখক-লেখিকাৰ ৫০খনৰো অধিক গ্ৰন্থ প্ৰকাশৰ ক্ষেত্ৰতো ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিছে।

সাহিত্য, সাংবাদিকতা, সম্পাদনা আৰু গ্ৰন্থ প্ৰকাশনৰ ক্ষেত্ৰত দীৰ্ঘদিনীয়া অৱদানৰ স্বীকৃতি হিচাপে হৰেন চন্দ্ৰ নাথক এই বঁটাৰ বাবে নিৰ্বাচিত কৰাত সাহিত্যপ্ৰেমী মহলে সন্তুষ্টি প্ৰকাশ কৰিছে।

সম্পাদকীয়

পাৰমাণৱিক ভাবুকিৰ ছাঁত বিশ্ব

ৰাছিয়া-ইউক্রেইন যুদ্ধই পাঁচ বছৰৰ দিশে আগবাঢ়ি যোৱাৰ সময়তে বিশ্ব ৰাজনীতিত উত্তেজনাৰ নতুন অধ্যায় আৰম্ভ হৈছে। ৰাছিয়াৰ ৰাষ্ট্রপতি ভলাদিমিৰ পুটিনে ইউক্রেইন সংঘাতৰ শান্তিপূর্ণ সমাধানৰ বাবে ভাৰতৰ প্রধানমন্ত্রী নৰেন্দ্র মোদীৰ প্রচেষ্টাৰ প্রশংসা কৰাৰ সমান্তৰালভাৱে পশ্চিমীয়া দেশ আৰু নেটোক কঠোৰ সতর্কবাণীও জাৰি কৰিছে। পুটিনৰ বক্তব্য অনুসৰি, ৰাছিয়াৰ ভূখণ্ডত পোনপটীয়া আক্রমণ হ'লে মস্কোৱে নিজৰ হাতত থকা 'সকলো অস্ত্র' ব্যৱহাৰৰ বিকল্প বিবেচনা কৰিব।

বিশেষকৈ কালিনিনগ্রাদক লৈ ৰাছিয়া আৰু নেটোৰ মাজত চলি থকা বাকযুদ্ধই উদ্বেগ বৃদ্ধি কৰিছে। আনহাতে নেটোৰ মহাসচিব মার্ক ৰুট্টে ৰাছিয়াৰ পাৰমাণৱিক বক্তব্যৰ বিৰোধিতা কৰি কৈছে যে নেটো এটা প্রতিৰক্ষামূলক মিত্রজোঁট আৰু কালিনিনগ্রাদক লক্ষ্য কৰি কোনো অভিযান চলোৱাৰ পৰিকল্পনা নাই।

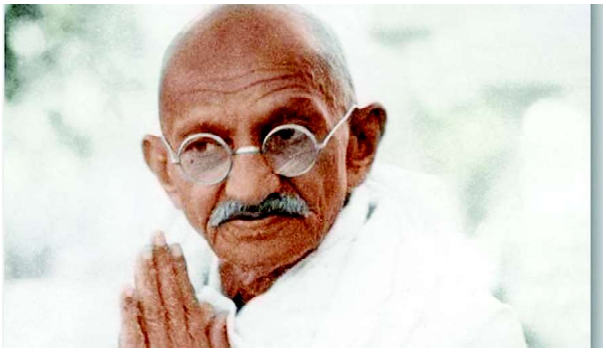
এই পৰিস্থিতিৰ আটাইতকৈ চিন্তাজনক দিশটো হৈছে-সামৰিক সংঘাতৰ মাজত পাৰমাণৱিক অস্ত্রৰ সম্ভাৱনাৰ কথা ক্রমাৎ প্রকাশ্যভাৱে উচ্চাৰিত হৈছে। ৰাছিয়া আৰু নেটো দুয়োটাই পাৰমাণৱিক শক্তি। সেয়েহে ভুল সামৰিক হিচাপ-নিকাচ, ভুল বুজাবুজি অথবা উত্তেজনামূলক সিদ্ধান্তে পৰিস্থিতিক নিয়ন্ত্রণৰ বাহিৰলৈ লৈ যাব পাৰে।

এই সংকটত ভাৰতৰ কূটনৈতিক ভূমিকা গুৰুত্বপূর্ণ। পুটিনে মোদীৰ শান্তি প্রচেষ্টাৰ প্রশংসা কৰাটোও তাৎপর্যপূর্ণ। যুদ্ধৰ সমাধান সামৰিক শক্তিৰে নহয়, আলোচনাৰ মেজতেই বিচাৰিব লাগিব।

বিশ্বৰ শক্তিধৰ দেশসমূহৰ দায়িত্ব হৈছে উত্তেজনা হ্রাস কৰা, সংলাপৰ পথ মুকলি ৰখা আৰু ভুল সিদ্ধান্তৰ সম্ভাৱনা কমোৱা। পাৰমাণৱিক যুদ্ধত কোনো প্রকৃত বিজয়ী নাথাকে; থাকে কেৱল অপূৰণীয় ক্ষতি আৰু প্রজন্মজুৰি বহন কৰিবলগীয়া ধ্বংসৰ স্মৃতি।

গান্ধীৰ হত্যাৰ পিছত প্রতিশোধৰ জুই

জন জন বিচাৰ
...ৰজনী শর্মা



১৯৪৮ চনৰ ৩০ জানুৱাৰী। সন্ধিয়া প্রায় পাঁচ বজাৰ কিছু পিছত। নতুন দিল্লীৰ বিৰলা ভৱনত প্রার্থনা সভালৈ আগবাঢ়ি যোৱাৰ সময়তে মহাত্মা গান্ধীৰ ওপৰত গুলী চলোৱা হয়। দেশজুৰি যেন এক মুহূর্ততে স্তব্ধতা নামি আহে। মাত্র কেইমাহমান আগতে স্বাধীনতা লাভ কৰা ভাৰত তেতিয়াও দেশভাগৰ ক্ষত, সাম্প্রদায়িক হিংসা আৰু লাখ লাখ মানুহৰ উদ্বাস্তু জীৱনৰ গভীৰ আঘাতৰ পৰা সম্পূর্ণৰূপে ওলাই আহিব পৰা নাছিল।

এনে সময়ত গান্ধীৰ হত্যাই কেৱল শোকেই কঢ়িয়াই নানিলে-দেশৰ কিছুমান অংশত সৃষ্টি হ'ল তীব্র ক্ষোভ আৰু প্রতিশোধৰ মনোভাৱ। গান্ধীৰ হত্যাৰ সৈতে জড়িত বুলি সন্দেহ কৰা ৰাজনৈতিক সংগঠন আৰু সেই সংগঠনৰ সৈতে সম্পর্ক থকা বুলি গণ্য কৰা লোকসকলৰ ঘৰ, দোকান আৰু কার্যালয় আক্রমণৰ খবৰ আহিবলৈ ধৰিলে।

অহিংসাৰ পথক জীৱনৰ মূল আদর্শ হিচাপে গ্রহণ কৰা এজন নেতাৰ হত্যাৰ পিছত প্রতিশোধৰ হিংসা-এই বৈপৰীত্যই তৎকালীন চৰকাৰকো গভীৰভাৱে উদ্বিগ্ন কৰি তুলিছিল।

পাটেলৰ তাৎক্ষণিক আহ্বান

গান্ধীৰ মৃত্যুৰ পিছদিনাই তৎকালীন উপ-প্রধানমন্ত্রী তথা গৃহমন্ত্রী চর্দাৰ বল্লভভাই পাটেলে জনসাধাৰণক শান্ত থাকিবলৈ আহ্বান জনাবলগীয়া হৈছিল।

১৯৪৮ চনৰ ১ ফেব্রুৱাৰীত প্রেছ তথ্য ব্যুৰোৱ জৰিয়তে প্রকাশিত পাটেলৰ আহ্বানত বোম্বে প্রদেশ আৰু কোলহাপুৰত হিন্দু মহাসভা আৰু ৰাষ্ট্রীয় স্বয়ংসেৱক সংঘৰ সদস্য আৰু তেওঁলোকৰ কার্যালয়ৰ বিৰুদ্ধে হিংসাত্মক ঘটনাৰ উল্লেখ কৰা হৈছিল। দিল্লীতো সৰু-সুৰা কিছুমান ঘটনাৰ তথ্য পোৱা গৈছিল।

পাটেলৰ বক্তব্যৰ মূল কথাটো আছিল স্পষ্ট-গান্ধীৰ হত্যাৰ দোষীক আইন অনুসৰি শাস্তি দিয়াৰ দায়িত্ব চৰকাৰৰ। কিন্তু কোনো ব্যক্তি বা সংগঠনৰ সৈতে সম্পর্ক থকা বুলি সন্দেহ কৰি সাধাৰণ নাগৰিকে নিজে আইন হাতত তুলি ল'ব নোৱাৰে।

তেওঁ জনসাধাৰণক সোঁৱৰাই দিছিল যে প্রতিশোধৰ হিংসা গান্ধীৰ জীৱন আৰু শিক্ষাৰ সম্পূর্ণ বিপৰীত। হত্যাকাণ্ড তদন্ত হওক, ষড়যন্ত্র থাকিলে তাৰো অনুসন্ধান হওক; কিন্তু বিচাৰৰ কাম আদালত আৰু চৰকাৰৰ, জনতাৰ ভিৰৰ নহয়।

বোম্বে, কোলহাপুৰৰ পৰা দিল্লীলৈ

পৰৱর্তী চৰকাৰী নথিসমূহেও পৰিস্থিতিৰ গভীৰতাৰ ইংগিত দিয়ে। প্রধানমন্ত্রী জৱাহৰলাল নেহৰুৱে ৫ ফেব্রুৱাৰী ১৯৪৮ত বিভিন্ন প্রদেশৰ মুখ্যমন্ত্রীসকললৈ লিখা পত্রত হিন্দু মহাসভাৰ পৰিচিত সমর্থকসকলৰ ওপৰত আক্রমণ, ঘৰ আৰু দোকান জ্বলাই দিয়া আৰু সংগঠনৰ কার্যালয় আক্রমণৰ কথা উল্লেখ কৰিছিল।

ঐতিহাসিক গৱেষণাত কানপুৰত সংঘৰ কার্যালয়ত ভিৰৰ আক্রমণ আৰু বোম্বেত বিনায়ক দামোদৰ সাভাৰকাৰৰ বাসভৱনত ভিৰৰ আক্রমণৰ কথাও উল্লেখ কৰা হৈছে।

কিন্তু উপলব্ধ চৰকাৰী নথিসমূহত দেশজুৰি এনে ঘটনাৰ কোনো নির্দিষ্ট মুঠ সংখ্যা দিয়া হোৱা নাই। সেয়েহে নিশ্চিত সংখ্যাৰে এই হিংসাৰ পৰিসৰ নির্ধাৰণ কৰাটো ইতিহাসৰ দৃষ্টিৰে সাৱধানতাৰ বিষয়। তথাপি চৰকাৰৰ শীর্ষ স্তৰৰ পৰা তাৎক্ষণিকভাৱে শান্তিৰ আহ্বান জনাবলগীয়া হোৱাটোৱে পৰিস্থিতিৰ গুৰুত্ব স্পষ্ট কৰে।

'অপৰাধীৰ শাস্তি চৰকাৰে দিব'

পাটেলৰ আহ্বানৰ এটা বিশেষ তাৎপর্য আছিল-তেওঁ কেৱল আইন-শৃংখলাৰ সমস্যা হিচাপে হিংসা বন্ধ কৰাৰ কথা কোৱা নাছিল। তেওঁ গান্ধীৰ শিক্ষাৰ সৈতে এই প্রশ্নটোক সংযোগ কৰিছিল।

তেওঁৰ বক্তব্য আছিল, যদি দেশবাসীয়ে ক্রোধ আৰু প্রতিশোধৰ বশৱর্তী হৈ আইন নিজৰ হাতত তুলি লয়, তেন্তে তেওঁলোকে গান্ধীৰ আদর্শৰ প্রতি সত্যনিষ্ঠ হৈ নাথাকিব।

একেসময়তে পাটেলে আশ্বাস দিছিল যে গান্ধীৰ হত্যাৰ দোষীক আইনৰ সন্মুখলৈ অনাৰ ক্ষেত্রত চৰকাৰে কোনো ধৰণৰ গাফিলতি নকৰিব। হত্যাকাণ্ডৰ আঁৰত ষড়যন্ত্র থাকিলে তাৰো অনুসন্ধান কৰা হ'ব।

এই বার্তাৰ ভিতৰত আছিল এটা মৌলিক নীতি-অপৰাধৰ বিচাৰ হ'ব আইনৰ জৰিয়তে, প্রতিশোধৰ জৰিয়তে নহয়।

২ ফেব্রুৱাৰীৰ অসাধাৰণ ৰাজপত্র

গান্ধীৰ মৃত্যুৰ দুদিন পিছত, ২ ফেব্রুৱাৰী ১৯৪৮ত ভাৰতৰ অসাধাৰণ ৰাজপত্রত গৃহ মন্ত্রালয়ে প্রকাশ কৰা দুটা প্রস্তাৱে সেই সময়ৰ চৰকাৰী মনোভাৱ অধিক স্পষ্ট কৰে।

প্রথম প্রস্তাৱত গান্ধীক ৰাষ্ট্রপিতা, অহিংসাৰ বার্তাবাহক, শান্তিৰ দূত আৰু স্বাধীনতা আন্দোলনৰ মহান নেতা হিচাপে স্মৰণ কৰা হয়। বিশেষকৈ দেশত শান্তি আৰু সাম্প্রদায়িক সম্প্রীতি প্রতিষ্ঠাৰ বাবে তেওঁৰ শেষ প্রচেষ্টাৰ কথা উল্লেখ কৰা হৈছিল।

ইয়াত এটা গুৰুত্বপূর্ণ ঘটনাও স্মৰণ কৰা হৈছিল। ১৮ জানুৱাৰীত গান্ধীয়ে দিল্লীত শান্তি আৰু সম্প্রীতি বজাই ৰখাৰ আশ্বাস লাভ কৰাৰ পিছত তেওঁৰ শেষ অনশন ভংগ কৰিছিল।

কিন্তু একেটা ৰাজপত্রৰ দ্বিতীয় প্রস্তাৱত দেশৰ বাবে আন এক কঠিন বাস্তৱতাৰ কথাও উল্লেখ কৰা হৈছিল। ঘৃণা আৰু হিংসাৰ শক্তিক চৰকাৰে দেশৰ স্বাধীনতা আৰু সামাজিক শান্তিৰ বাবে গুৰুতৰ বিপদ হিচাপে চিহ্নিত কৰিছিল।

চৰকাৰে কঠোৰ আৰু ন্যায়সংগত ব্যৱস্থাৰ কথা ঘোষণা কৰাৰ লগতে জনসাধাৰণক আইন নিজৰ হাতত নল'বলৈও আহ্বান জনাইছিল। হিংসা বা সাম্প্রদায়িক ঘৃণা বিয়পোৱা সংগঠন আৰু ব্যক্তিগত সশস্ত্র বাহিনী সহ্য কৰা নহ'ব বুলি স্পষ্ট কৰা হৈছিল।

গান্ধীৰ মৃত্যুৰ পিছতো গান্ধীৰ পৰীক্ষা

৩০ জানুৱাৰীৰ পৰা ২ ফেব্রুৱাৰীলৈ এই কেইটামান দিন একেলগে চালে গান্ধীৰ হত্যাৰ পিছৰ ভাৰতৰ এক জটিল ছবি পোহৰলৈ আহে।

এফালে আছিল জাতীয় শোক, আনফালে হত্যাৰ বাবে উত্থাপিত তীব্র ক্ষোভ। এফালে হত্যাকাণ্ডৰ তদন্ত আৰু ষড়যন্ত্রৰ সন্ধান, আনফালে সেই ক্ষোভ যাতে সামূহিক প্রতিশোধ আৰু নির্দোষ লোকৰ ওপৰত আক্রমণলৈ পৰিণত নহয়-এই আছিল চৰকাৰৰ তাৎক্ষণিক প্রত্যাহ্বান।

আজিও এই ঘটনাৰ ঐতিহাসিক তাৎপর্য সেইখিনিতে। গান্ধীৰ হত্যাৰ পিছত চৰকাৰী নথিত একেলগে দুটা বার্তা দেখা যায়-ঘৃণা আৰু হিংসাৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ আইনগত ব্যৱস্থা হ'ব, কিন্তু সেই ব্যৱস্থাৰ অধিকাৰ কোনো উন্মত্ত জনসমষ্টিৰ হাতত নাথাকিব।

১৮ জানুৱাৰীত শান্তিৰ আশ্বাসত অনশন ভংগ কৰা গান্ধীৰ মৃত্যু হৈছিল মাত্র বাৰ দিন পিছত। আৰু তেওঁৰ মৃত্যুৰ পিছতেই দেশখনক পুনৰ বুজাবলগীয়া হৈছিল এটা কঠিন সত্য-গান্ধীৰ হত্যাৰ প্রতিশোধ যদি হিংসাৰে লোৱা হয়, তেন্তে সেই প্রতিশোধে প্রথমে হত্যা কৰিব গান্ধীৰ নিজৰ আদর্শকেই।

এনডিএৰ ভিতৰতে চিৰাগৰ তীব্ৰ সুৰ, বিহাৰৰ আইন শৃংখলাক লৈ নিজ চৰকাৰকেই কাঠগড়াত থিয় কৰালে

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

কেন্দ্ৰীয় মন্ত্ৰী তথা লোক জনশক্তি পাৰ্টি (ৰামবিলাস)-ৰ নেতা চিৰাগ পাছৱানে বিহাৰৰ আইন-শৃংখলা পৰিস্থিতিক লৈ নিজৰেই মিত্ৰজোঁট চৰকাৰৰ বিৰুদ্ধে তীব্ৰ অসন্তুষ্টি প্ৰকাশ কৰাত বিহাৰৰ ৰাজনীতিত নতুন চৰ্চাৰ সৃষ্টি হৈছে। চৰকাৰৰ অংশীদাৰ হৈয়েই প্ৰশাসনৰ কাম-কাজক লৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰা চিৰাগৰ মন্তব্যই এনডিএৰ ভিতৰৰ সমীকৰণক লৈও জল্পনা-কল্পনা বৃদ্ধি কৰিছে।

২৬ ছেপ্টেম্বৰত 'চিটি পোষ্ট'ৰ এক সন্মিলনত চিৰাগ পাছৱানক বিহাৰত অপৰাধ বৃদ্ধি, মহিলা আৰু দলিতসকলৰ সুৰক্ষা সম্পৰ্কে প্ৰশ্ন কৰা হৈছিল। উত্তৰত তেওঁ কয় যে বৰ্তমান বিহাৰত কোনো লোকেই সম্পূৰ্ণ নিৰাপদ বুলি অনুভৱ কৰিব পৰা নাই। চৰকাৰৰ অংশীদাৰ হিচাপে এই প্ৰশ্নৰ পৰা তেওঁ আঁতৰি যাব নোৱাৰে বুলিও তেওঁ স্পষ্ট কৰে।

চিৰাগে কয় যে এনে ঘটনাৰ মাজত চৰকাৰৰ অংশ হৈ থকাৰ বাবে তেওঁ নিজেই 'লজ্জিত' অনুভৱ কৰে। তেওঁৰ মতে, বিহাৰৰ ছোৱালীৰ মাজত নিৰাপত্তাহীনতাৰ ভাব সৃষ্টি হৈছে আৰু সন্ধিয়াৰ পিছত বাহিৰলৈ ওলোৱাৰ আগতে বহু পৰিয়ালে চিন্তা কৰিবলগীয়া পৰিস্থিতি হৈছে। চৰকাৰে নাগৰিকক প্ৰয়োজনীয় নিৰাপত্তাৰ অনুভূতি দিব নোৱাৰিলে সেয়া তেওঁ মানি নল'ব বুলিও





মন্তব্য কৰে।

নিজ চৰকাৰকেই প্ৰশ্ন, লক্ষ্য কাৰ?

চিৰাগৰ এই বক্তব্যৰ বিশেষ তাৎপৰ্য আছে, কাৰণ তেওঁ বিহাৰৰ শাসকীয় মিত্ৰজোঁটৰ অংশ। সেয়েহে তেওঁৰ সমালোচনা কেৱল বিৰোধী দলৰ চৰকাৰ-বিৰোধী বক্তব্যৰ দৰে নহয়; ই চৰকাৰৰ ভিতৰৰ এজন অংশীদাৰৰ পৰা অহা ৰাজহুৱা আপত্তি।

ৰাজনৈতিক মহলৰ একাংশৰ মতে, এই বক্তব্য বিহাৰৰ আইন-শৃংখলাৰ প্ৰশ্নক কেন্দ্ৰ কৰি চৰকাৰৰ ওপৰত চাপ সৃষ্টি কৰাৰ কৌশল হ'ব পাৰে। আনহাতে, ইয়াক ২০২৭ৰ উত্তৰ প্ৰদেশ বিধানসভা নিৰ্বাচনৰ পূৰ্বে বিজেপিৰ সৈতে চিৰাগৰ সম্ভাব্য আসন-বুজাবুজি আৰু ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱ বৃদ্ধিৰ প্ৰচেষ্টাৰ সৈতেও সংযোগ কৰি দেখা হৈছে। অৱশ্যে উত্তৰ প্ৰদেশত চিৰাগৰ দলৰ নিৰ্দিষ্ট আসন-দাবী বা কোনো নতুন মিত্ৰতা সম্পৰ্কে এই বক্তব্যই নিজে কোনো নিশ্চিত ঘোষণা নকৰে।

'মোদীৰ হনুমান'ৰ সুৰ কিয় সলনি?

চিৰাগ পাছৱানে বহু সময়ত নিজকে প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীৰ প্ৰতি আনুগত্যশীল নেতা হিচাপে উপস্থাপন কৰি আহিছে। কিন্তু বিহাৰৰ আইন-শৃংখলাক লৈ এইবাৰৰ বক্তব্যত তেওঁ মিত্ৰ চৰকাৰকেই প্ৰশ্নৰ সম্মুখীন কৰিছে।

ইয়াৰ আন এটা ৰাজনৈতিক দিশো আছে। বিহাৰত আইন-শৃংখলাক লৈ বিৰোধী দলসমূহে দীৰ্ঘদিন ধৰি চৰকাৰক আক্ৰমণ কৰি আহিছে। এতিয়া চৰকাৰৰ ভিতৰৰেই এজন কেন্দ্ৰীয় মন্ত্ৰীয়ে একে বিষয়ত অসন্তুষ্টি প্ৰকাশ কৰাত বিষয়টোৱে নতুন ৰাজনৈতিক মাত্ৰা লাভ কৰিছে।

বিহাৰৰ পৰা উত্তৰ প্ৰদেশ নতুন চাপৰ ৰাজনীতি?

চিৰাগৰ বক্তব্যৰ পিছত আটাইতকৈ ডাঙৰ প্ৰশ্ন হৈছে-এইটো কেৱল বিহাৰৰ আইন-শৃংখলা সম্পৰ্কীয় ক্ষোভ নে আগন্তুক উত্তৰ প্ৰদেশ নিৰ্বাচনক লক্ষ্য কৰি বৃহত্তৰ ৰাজনৈতিক কৌশল?

২০২৭ৰ উত্তৰ প্ৰদেশ বিধানসভা নিৰ্বাচনৰ পূৰ্বে এনডিএৰ অংশীদাৰ দলসমূহৰ মাজত আসন-বুজাবুজি, সংগঠনগত বিস্তাৰ আৰু ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱৰ প্ৰশ্ন গুৰুত্ব লাভ কৰিব। চিৰাগৰ দলেও উত্তৰ প্ৰদেশত নিজৰ উপস্থিতি বিস্তাৰ কৰিব বিচাৰে নেকি-এই প্ৰশ্ন এতিয়া ৰাজনৈতিক আলোচনাৰ কেন্দ্ৰলৈ আহিছে।

কিন্তু এতিয়ালৈকে চিৰাগ পাছৱানৰ মন্তব্যৰ পৰা এনডিএৰ পৰা আঁতৰি যোৱাৰ কোনো নিশ্চিত সংকেত পোৱা হোৱা নাই। বৰং তেওঁৰ বক্তব্যক চৰকাৰৰ ভিতৰত থাকি চৰকাৰৰ ওপৰত চাপ সৃষ্টি কৰা ৰাজনৈতিক কৌশল হিচাপে ব্যাখ্যা কৰা হৈছে।

সেয়েহে মূল প্ৰশ্ন এতিয়া এটাই-চিৰাগৰ এই তীব্ৰ সুৰ কেৱল বিহাৰৰ আইন-শৃংখলাৰ প্ৰতি উদ্বেগ, নে ২০২৭ৰ নিৰ্বাচনৰ পূৰ্বে এনডিএৰ ভিতৰত নিজৰ ৰাজনৈতিক স্থান অধিক শক্তিশালী কৰাৰ আৰম্ভণি?

পৃষ্ঠা ৯ ৰ পৰা—

প্ৰধানমন্ত্ৰী তাৰেক ৰহমানৰ চৰকাৰক উৎখাতৰ ষড়যন্ত্ৰ

বিদেশমন্ত্ৰীৰ ভূমিকাক লৈও অভিযোগ

প্ৰতিবেদনসমূহত বাংলাদেশৰ বিদেশমন্ত্ৰী খলিলুৰ ৰহমানৰ ভূমিকাক লৈও প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰা হৈছে। তেওঁ প্ৰধানমন্ত্ৰী তাৰেক ৰহমানৰ চৰকাৰক দুৰ্বল কৰাৰ বৃহত্তৰ পৰিকল্পনাৰ সৈতে জড়িত বুলি কিছুমান সূত্ৰৰ দাবী উদ্ধৃত কৰা হৈছে।

সংযুক্ত ৰাষ্ট্ৰ সাধাৰণ সভাৰ অধিৱেশনৰ সময়ত তুৰস্কৰ ৰাষ্ট্ৰপতি ৰেচেপ তাইয়িপ এৰদোৱান, ইৰাণৰ ৰাষ্ট্ৰপতি মাসুদ পেজেশ্কিয়ান আৰু পাকিস্তানৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্বেহবাজ শ্বৰীফৰ সৈতে বাংলাদেশৰ প্ৰতিনিধিদলৰ বৈঠকক লৈও প্ৰতিবেদনত বিভিন্ন প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰা হৈছে। অৱশ্যে কূটনৈতিক বৈঠক অনুষ্ঠিত হোৱা মানেই কোনো অভ্যুত্থান পৰিকল্পনাৰ অংশ বুলি প্ৰমাণ নকৰে।

তাৰেক ৰহমানৰ ভৰিষ্যৎক লৈ জল্পনা

বাংলাদেশৰ ৰাজনীতিত এতিয়া আটাইতকৈ গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰশ্ন হৈছে-প্ৰধানমন্ত্ৰী তাৰেক ৰহমানৰ চৰকাৰ কিমান স্থিৰ?

শ্বেখ হাছিনা চৰকাৰৰ পতনৰ পিছত বাংলাদেশৰ ৰাজনীতিত সেনা, অসামৰিক প্ৰশাসন আৰু বিভিন্ন ৰাজনৈতিক শক্তিৰ মাজৰ ক্ষমতাৰ সমীকৰণে নতুন ৰূপ লৈছে। এই পৰিস্থিতিত সেনাৰ ভিতৰত কোনো অসন্তুষ্টি বা ৰাজনৈতিক হস্তক্ষেপৰ চেষ্টা হৈছে নেকি-সেই প্ৰশ্নৰ উত্তৰ এতিয়াও স্পষ্ট নহয়।

তাৰেক ৰহমানৰ চৰকাৰ উৎখাতৰ ষড়যন্ত্ৰৰ দাবী সত্য হলে ই কেৱল বাংলাদেশৰ অভ্যন্তৰীণ ৰাজনীতিৰ বিষয় হৈ নাথাকিব। ভাৰতৰ উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ সুৰক্ষা, বঙ্গোপসাগৰীয় অঞ্চলৰ কৌশলগত পৰিস্থিতি আৰু দক্ষিণ এছিয়াৰ শক্তিৰ সমীকৰণতো ইয়াৰ প্ৰভাৱ পৰিব পাৰে।

অভ্যুত্থানৰ দাবী নে ৰাজনৈতিক জল্পনা?

বাংলাদেশত সম্ভাব্য 'তখতাপলট'ৰ দাবীক লৈ এতিয়া বহু কথা চৰ্চাত আছে যদিও সকলো দাবীৰ সত্যতা পৰীক্ষা হোৱা নাই। আইএছআইৰ উপস্থিতি, সেনাৰ ভিতৰৰ গোপন বৈঠক আৰু এখন অৰাজনৈতিক চৰকাৰ গঠনৰ পৰিকল্পনা-এই সকলোবোৰেই বৰ্তমান মূলতঃ প্ৰতিবেদন আৰু নাম প্ৰকাশ নকৰা সূত্ৰৰ দাবীৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল।

সেয়েহে বাংলাদেশৰ সেনা বা চৰকাৰৰ পৰা স্পষ্ট তথ্য প্ৰকাশ নোহোৱালৈকে এই ঘটনাক নিদ্ৰিশ্চত সামৰিক অভ্যুত্থানৰ প্ৰস্তুতি বুলি কোৱাটো আগতীয়া হব। কিন্তু একে সময়তে, বাংলাদেশৰ সাম্প্ৰতিক ৰাজনৈতিক অস্থিৰতা আৰু সামৰিক-অসামৰিক ক্ষমতাৰ সমীকৰণক লৈ উত্থাপিত এই অভিযোগসমূহে অঞ্চলটোৰ নিৰাপত্তা পৰিস্থিতিৰ ওপৰত নতুনকৈ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিছে।

মূল প্ৰশ্ন এতিয়া এটাই-বাংলাদেশত সাঁচাকৈয়ে ক্ষমতা পৰিৱৰ্তনৰ কোনো গোপন পৰিকল্পনা চলিছে নেকি, নে বিভিন্ন ৰাজনৈতিক স্বাৰ্থৰ মাজত সৃষ্টি হোৱা জল্পনাই 'অভ্যুত্থান'ৰ এক নতুন কাহিনী গঢ়ি তুলিছে?

'আপুনি ভাৰতীয় বুলি প্ৰমাণ কৰক'-কলকাতা উচ্চ ন্যায়ালয়

কলকাতা। ভাৰতীয় নাগৰিকত্ব প্ৰমাণক লৈ পশ্চিমবংগৰ মুৰ্শিদাবাদত সৃষ্টি হোৱা এক গোচৰত কলকাতা উচ্চ ন্যায়ালয়ে কঠোৰ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে। স্বামীক দেশৰ পৰা বহিষ্কাৰ নকৰিবলৈ নিৰ্দেশ বিচাৰি আদালতৰ দ্বাৰস্থ হোৱা এগৰাকী মহিলাৰ আবেদন খাৰিজ কৰি ন্যায়াধীশ কৃষ্ণ ৰাওৰ একক বিচাৰপীঠে সংশ্লিষ্ট ব্যক্তিজনক নিজৰ ভাৰতীয় নাগৰিকত্বৰ প্ৰমাণ দাখিল কৰিবলৈ কয়।

গোচৰটো মুৰ্শিদাবাদৰ নৰগিছ বিবিৰ স্বামী ছেলিম শ্বেখক লৈ। ছেলিমক ৩১ আগষ্টৰ পৰা নিৰোধ কেন্দ্ৰত ৰখা হৈছে। আৰক্ষীৰ দাবী, অভিযানৰ সময়ত উদ্ধাৰ হোৱা কেইবাখনো নথিৰ পৰা তেওঁ অবৈধ বাংলাদেশী নাগৰিক হোৱাৰ ইংগিত পোৱা গৈছে।

আদালতত শুনানিৰ সময়ত এটা গুৰুত্বপূৰ্ণ তথ্য পোহৰলৈ আহে। নৰগিছ বিবিৰ নাম ২০০২ আৰু ২০২৬-দুয়োখন ভোটাৰ তালিকাতে আছে। কিন্তু তেওঁৰ স্বামী ছেলিম শ্বেখৰ নাম কোনো এখন তালিকাতো পোৱা নগ'ল।

এই তথ্যইনাগৰিকত্বক লৈ চলি থকা বিতৰ্কক অধিক গুৰুত্বপূৰ্ণ কৰি তুলিছে। অৱশ্যে কেৱল ভোটাৰ তালিকাত নাম থকা বা নথকাৰ ভিত্তিত কোনো ব্যক্তিৰ নাগৰিকত্বৰ চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত ল'ব নোৱাৰি; সংশ্লিষ্ট নথি আৰু আইনী প্ৰক্ৰিয়াও এই ক্ষেত্ৰত গুৰুত্বপূৰ্ণ।

পশ্চিম বংগ আৰক্ষীৰ হৈ আদালতত উপস্থিত অধিবক্তাই কয় অভিযানত এনে কিছুমান নথি উদ্ধাৰ কৰা হৈছে, যাৰ ভিত্তিত ছেলিমক অবৈধ বাংলাদেশী প্ৰব্ৰজনকাৰী বুলি সন্দেহ কৰা হৈছে।

আৰক্ষীৰ মতে, অবৈধ প্ৰব্ৰজনকাৰীৰ সন্ধান, চিনাক্তকৰণ আৰু দেশৰ পৰা বহিষ্কাৰৰ সৈতে জড়িত কেন্দ্ৰীয় গৃহ মন্ত্ৰালয়ৰ মে' ২০২৬ৰ অধিসূচনাৰ অধীনতে ছেলিমক আটক কৰা হৈছে।

পিতৃপক্ষত সপোনত পূৰ্বপুৰুষ দেখা দিলে কি সংকেত?

জন জন বিচাৰ

...হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

পিতৃপক্ষ হৈছে পূৰ্বপুৰুষক স্মৰণ, শ্ৰদ্ধা আৰু তৰ্পণ কৰাৰ এক বিশেষ সময়। এই সময়ছোৱাত বহু লোকেই নিজৰ মৃত আত্মীয়-স্বজন বা পূৰ্বপুৰুষক সপোনত দেখা পোৱাৰ কথা কয়। কেতিয়াবা তেওঁলোকক হাঁহি থকা দেখা যায়, কেতিয়াবা দুখী বা কান্দি থকা অৱস্থাত, আনহাতে কেতিয়াবা খাদ্য-পানী বিচৰা বা কথা পতা দেখা যায়।

সপোনৰ বিষয়ে সমাজত বহুদিনৰ পৰা বিভিন্ন ধৰণৰ ধৰ্মীয় আৰু সাংস্কৃতিক বিশ্বাস প্ৰচলিত হৈ আহিছে। স্বপ্নশাস্ত্ৰৰ সৈতে জড়িত পৰম্পৰাগত বিশ্বাস অনুসৰি, পিতৃপক্ষত পূৰ্বপুৰুষক সপোনত দেখাৰ ধৰণ আৰু তেওঁলোকৰ আচৰণৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি ইয়াৰ ভিন্ন অৰ্থ ব্যাখ্যা কৰা হয়। অৱশ্যে এইবোৰ ধৰ্মীয় বিশ্বাস আৰু লোকাচাৰৰ অংশ; ইয়াক বৈজ্ঞানিকভাৱে প্ৰমাণিত ভৱিষ্যদ্বাণী হিচাপে ল'ব নালাগে।

হাঁহি থকা বা সুখী ৰূপত পূৰ্বপুৰুষ

যদি পিতৃপক্ষৰ সময়ত সপোনত পূৰ্বপুৰুষক হাঁহি থকা, সন্তুষ্ট বা আনন্দিত ৰূপত দেখা যায়, তেন্তে পৰম্পৰাগত বিশ্বাসত ইয়াক শুভ লক্ষণ বুলি গণ্য কৰা হয়।

স্বপ্নশাস্ত্ৰৰ সৈতে জড়িত বিশ্বাস অনুসৰি, এনে সপোন পূৰ্বপুৰুষৰ আশীৰ্বাদ আৰু পৰিয়ালৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ সন্তুষ্টিৰ প্ৰতীক হ'ব পাৰে। কিছুমান লোকবিশ্বাসত এনে সপোনক পৰিয়ালত সুখ-শান্তি আৰু মংগলৰ ইংগিত হিচাপেও ব্যাখ্যা কৰা হয়।

পূৰ্বপুৰুষক দুখী বা কান্দি থকা দেখা

আনহাতে, যদি সপোনত পূৰ্বপুৰুষক দুখী, বিষণ্ণ বা কান্দি থকা অৱস্থাত দেখা যায়, তেন্তে লোকবিশ্বাসত ইয়াক শুভ বুলি ধৰা নহয়।

পৰম্পৰাগত ব্যাখ্যা অনুসৰি, এনে সপোনক পূৰ্বপুৰুষৰ অসন্তুষ্টি বা পৰিয়ালৰ কোনো সম্ভাব্য সমস্যাৰ প্ৰতীক হিচাপে দেখা হয়। এনে সপোনৰ পিছত বহু পৰিয়ালে পূৰ্বপুৰুষৰ উদ্দেশ্যে শ্ৰাদ্ধ, তৰ্পণ বা অন্যান্য পৰম্পৰাগত আচাৰ-অনুষ্ঠান পালন কৰে।

সপোনত খাদ্য বা পানী বিচৰা

সপোনত পূৰ্বপুৰুষে খাদ্য বা পানী বিচৰা দৃশ্যকো পিতৃপক্ষৰ সময়ত বিশেষ তাৎপৰ্যপূৰ্ণ বুলি ধৰা হয়।

স্বপ্নশাস্ত্ৰৰ সৈতে জড়িত বিশ্বাস অনুসৰি, এনে সপোনক পূৰ্বপুৰুষৰ উদ্দেশ্যে শ্ৰাদ্ধ বা তৰ্পণ কৰাৰ স্মৰণবাণী হিচাপে ব্যাখ্যা কৰা হয়। সেইবাবে পিতৃপক্ষত পৰম্পৰা অনুসৰি শ্ৰাদ্ধ-তৰ্পণ কৰা, সামৰ্থ্য অনুসৰি দান কৰা আৰু ব্ৰাহ্মণক আহাৰ কৰোৱাৰ প্ৰথা বহু পৰিয়ালত পালন কৰা হয়।

সপোনত পূৰ্বপুৰুষৰ সৈতে কথা পতা

কেতিয়াবা সপোনত মানুহে নিজৰ মৃত পিতৃ-মাতৃ, ককা-আইতা বা আন কোনো পূৰ্বপুৰুষৰ সৈতে কথা পতা দেখা পায়। এনে সপোনক লৈও বিভিন্ন লোকবিশ্বাস আছে।

স্বপ্নশাস্ত্ৰৰ পৰম্পৰাগত ব্যাখ্যাত এনে সপোনক কেতিয়াবা জীৱনত আহিব পৰা কোনো সমস্যা বা সাৱধান হোৱাৰ ইংগিত হিচাপে দেখা হয়। এনে বিশ্বাসৰ আধাৰত পূৰ্বপুৰুষৰ উদ্দেশ্যে শ্ৰাদ্ধ আৰু তৰ্পণ কৰাৰ পৰামৰ্শ দিয়া হয়।

সপোন নে স্মৃতিৰ প্ৰতিফলন?

পিতৃপক্ষত পূৰ্বপুৰুষক সপোনত দেখাটো বহু পৰিয়ালৰ বাবে গভীৰ আবেগৰ বিষয়। বিশেষকৈ যিসকলক আমি জীৱনত অতি ওচৰৰ পৰা পাইছোঁ, তেওঁলোকৰ স্মৃতি মনত সজীৱ হৈ থাকিলে সপোনতো তেওঁলোকৰ উপস্থিতি অনুভৱ কৰাটো স্বাভাৱিক।

সেয়ে সপোনৰ ধৰ্মীয় ব্যাখ্যাৰ লগতে ইয়াৰ মানসিক দিশটোও মনত ৰখা প্ৰয়োজন। স্বপ্নশাস্ত্ৰৰ বিভিন্ন ব্যাখ্যা মূলতঃ ধৰ্মীয় বিশ্বাস, লোকাচাৰ আৰু পৰম্পৰাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল।

পিতৃপক্ষৰ মূল শিক্ষা অৱশ্যে কেৱল সপোনৰ সংকেত বিচৰা নহয়-ই হৈছে পূৰ্বপুৰুষক স্মৰণ কৰা, তেওঁলোকৰ প্ৰতি কৃতজ্ঞতা প্ৰকাশ কৰা আৰু পৰিয়ালৰ পৰম্পৰা-সংস্কৃতিৰ সৈতে নিজৰ সম্পৰ্ক পুনৰ অনুভৱ কৰা। সেইবাবেই সপোনত পূৰ্বপুৰুষ আহক বা নাহক, এই সময়ছোৱাত শ্ৰদ্ধা, স্মৰণ আৰু পৰম্পৰাগত কৰ্মকেই অধিক গুৰুত্ব দিয়া হয়।

'স্বামীৰ পদ খালী আছে'-গুগল ফৰ্মত জীৱনসংগীৰ সন্ধান

জীৱনসংগী বিচৰাৰ পদ্ধতিও যে ডিজিটেল যুগত সলনি হৈছে, তাৰ এক অভিনৱ উদাহৰণ এতিয়া ছ'চিয়েল মিডিয়াত চর্চিত। আমেৰিকাৰ নৰ্থ কেৰ'লিনাৰ শ্বার্লটৰ ৩৬ বছৰীয়া এৰিন পেটাৰছনে ডেটিং এপৰ সলনি গুগল ফৰ্মৰ জৰিয়তে স্বামীৰ সন্ধান আৰম্ভ কৰিছে।

ডেটিং এপৰ সলনি অভিনৱ পন্থা ৩৬ বছৰীয়া মহিলাৰ, ২৪০ৰো অধিক আবেদন

তেওঁ ছ'চিয়েল মিডিয়াত এটা ফৰ্ম শ্বেয়াৰ কৰি সম্ভাব্য জীৱনসংগীক আবেদন কৰিবলৈ আহ্বান জনায়। আশ্চর্যজনকভাৱে, ২৪০ৰো অধিক পুৰুষে ফৰ্ম পূৰণ কৰি আগ্ৰহ প্ৰকাশ কৰিছে।

পেটাৰছনে বিচাৰে এজন সুদৰ্শন, বুদ্ধিমান, দয়ালু, বিশ্বাসযোগ্য আৰু উদাৰ মনৰ সংগী। ফৰ্মত কেৱল নাম, বয়স বা ঠিকনা নহয়, কেৰিয়াৰ, দৈনন্দিন জীৱনশৈলী, ব্যক্তিগত অভ্যাস, বিবাহ, পৰিয়াল আৰু ভৱিষ্যৎ পৰিকল্পনা সম্পৰ্কেও প্ৰশ্ন কৰা হৈছে।

তেওঁৰ মতে, ডেটিং এপত বহু সময় কথা-বতৰাতে পাৰ হয় আৰু বহুজনৰ উদ্দেশ্য স্পষ্ট নাথাকে। সেয়ে আৰম্ভণিৰ পৰাই দুয়োপক্ষৰ আশা-আকাংক্ষা জানিব বিচাৰিছে।

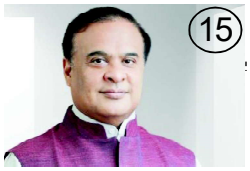
এই অভিনৱ উদ্যোগ ছ'চিয়েল মিডিয়াত ভাই�ৰেল হোৱাৰ পিছত বহু ব্যৱহাৰকাৰীয়ে তেওঁৰ স্পষ্টবাদিতা আৰু নতুন চিন্তাৰ প্ৰশংসা কৰিছে। অৱশ্যে ২৪০ আবেদনকাৰীৰ মাজৰ পৰা অৱশেষত কাক জীৱনসংগী হিচাপে বাছি ল'ব, সেয়া এতিয়াও অজ্ঞাত।

ডিজিটেল যুগত জীৱনসংগী বিচৰাৰ পথ সলনি হৈছে, কিন্তু সম্পৰ্কৰ মূল ভেটি-বিশ্বাস, সন্মান আৰু বুজাবুজি-এতিয়াও একেই।



VOICE OF ALL, FOR ALL
WEEKLY
JAN JAN VICHAR
Guwahati, Friday, 2 October 2026





Crisis at 33,000 Feet: The Pilot Who Fought to Save His Flight

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

Commercial aviation is built around layers of safety. The cockpit is the most protected part of an aircraft, secured by procedures, technology and trained professionals. Yet Flydubai Flight FZ1073, travelling from Dubai to Tel Aviv, faced a terrifying emergency when a violent confrontation reportedly erupted inside the cockpit. Indian Captain Smit Machchhar was seriously injured, and the aircraft subsequently lost thousands of feet of altitude in a matter of seconds. What followed was an extraordinary sequence of decisions by the injured captain, crew members and passengers that helped prevent a potentially catastrophic outcome.

The aircraft, carrying 174 people, was eventually diverted to Tabuk, Saudi Arabia, where it landed safely. Machchhar was taken to hospital and was reported to be in stable condition.

WHAT HAPPENED

According to reports, the emergency unfolded around two and a half hours after departure. A confrontation between the pilots reportedly turned violent, with Machchhar suffering serious injuries. The aircraft transmitted an emergency signal and then underwent a rapid descent. Reports have put the loss of altitude at more than 14,000 feet in roughly 30 seconds. The precise sequence of events inside the cockpit remains under investigation. However, the critical moment came when the injured captain managed to activate the cockpit door's emergency release mechanism. Despite his injuries, Machchhar was able to unlock the door and allow others to gain access to the flight deck. That action proved crucial.

HOW THE AIRCRAFT WAS SAVED

Once the cockpit became accessible, crew members and passengers were able to intervene and restrain the attacker. Reports also indicate that two off-duty pilots



were among those travelling on the aircraft and assisted during the emergency. Their aviation experience became particularly valuable as the situation was brought under control. The episode was therefore not the result of one action alone. It was a chain of responses: Machchhar managed to open the cockpit door; crew members and passengers responded; aviation-trained people on board assisted; and the aircraft was diverted for an emergency landing. The reported rapid loss of altitude underlines just how little time was available.

In an aircraft travelling at cruising speed, losing more than 14,000 feet in less than half a minute is an extraordinary event. The fact that the aircraft was subsequently stabilised and landed safely at Tabuk made the response even more significant.

WHAT WENT WRONG?

The most disturbing aspect of the incident is that the reported threat came from inside the cockpit. Modern aviation security is designed around multiple layers of protection. Cockpit doors are reinforced and access is tightly controlled. Pilots undergo professional training, licensing and medical and operational checks. But no security system can eliminate every human risk.

The incident raises important questions: How did the confrontation begin? Were there warning signs before the flight? Could the behaviour of the co-pilot have been identified earlier? Were existing procedures sufficient to deal with a violent emergency involving flight-deck personnel? These questions require evidence, not speculation.

Authorities in the UAE have ordered an investigation into the incident. The probe is expected to examine the circumstances of the confrontation, the actions of those involved and the possible motive. Public claims about terrorism or other motives should therefore be treated cautiously until investigators establish the facts.

WHAT AVIATION MUST LEARN

The incident highlights a difficult problem for the aviation industry: how should an aircraft respond when the threat originates from inside the flight deck? The answer cannot simply be stronger cockpit doors. Security must also consider situations in which one or both pilots become incapacitated, or when control of the cockpit itself becomes contested. Emergency procedures, crew training, access protocols and systems for recovering control of an aircraft all deserve careful examination.

At the same time, aviation authorities face a delicate challenge. Strengthening screening and monitoring must not become an exercise in hindsight or assumptions about individual behaviour. A person can pass every formal check and still face circumstances that emerge later.

The lesson, therefore, is not that existing aviation safeguards have failed entirely. Rather, the incident demonstrates why safety systems must continually be tested against even the rarest scenarios.

BEYOND A STORY OF COURAGE

Captain Smit Machchhar's actions have understandably attracted widespread appreciation. Seriously injured and under extreme pressure, he reportedly managed to open the cockpit door, creating an opportunity for others to intervene. But the larger story is about layers of safety working under extraordinary circumstances. The captain's actions, the response of the crew and passengers, the assistance of other pilots and the aircraft's emergency procedures collectively helped bring 174 people safely to the ground. Now the investigation must answer the harder questions.

What triggered the confrontation? Why did the aircraft lose altitude so rapidly? How was control regained? Did existing procedures work as designed? And what changes, if any, are needed to prevent a similar crisis? The aircraft landed safely. The immediate danger passed. But the real measure of this incident will be what the aviation industry learns from it. Courage may have helped save the flight that day. The responsibility now is to ensure that stronger systems make such courage less likely to be needed again.

CM Convoy Is No Bigger Than a Patient's Life

Himanta Apologises Over Ambulance Halt

Jan Jan Vichar
...✍Silchar

A serious controversy has erupted in Assam after an ambulance carrying a critically ill patient was allegedly stopped to allow Chief Minister Himanta Biswa Sarma's convoy to pass through Silchar.

Four traffic police personnel have been suspended following the incident, which came to light after a video of the ambulance being held up near Ramnagar ISBT surfaced on social media.

The ambulance was carrying 47-year-old Rajraj Chakraborty, who was suffering from liver cirrhosis and was being taken to Silchar Medical College and Hospital (SMCH) in critical condition. According to the report, the ambulance was stopped for around four minutes to facilitate the Chief Minister's convoy.



The incident assumed greater significance after Chakraborty subsequently died while undergoing treatment at SMCH. The Chief Minister ordered an inquiry and publicly apologised over the incident, while stating that emergency medical services must always receive priority over VIP movements.

Sarma said ambulances and other emergency vehicles should not be stopped under any circumstances to facilitate a VIP convoy. He also stressed that there is no place for VIP culture in the "new Assam" and described the Chief Minister as a "chief servant".

At the same time, the Chief Minister said the patient had been suffering from a serious illness and that the few minutes' delay in reaching the hospital could not be directly linked to his death. The tragedy has nevertheless raised serious questions over the implementation of emergency-response protocols during VIP movements. For Chakraborty's family, the loss has also brought a devastating financial burden. His wife has appealed for government assistance, saying he was the family's sole breadwinner and left behind two young children.

The episode has put the spotlight on a basic principle of public administration: when every minute can matter, an ambulance carrying a patient must never become an obstacle to a VIP convoy.

Rakibul Hussain Was Born Eating Dry Fish, Not Biryani: Ajmal

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

The political rhetoric surrounding the Nagaon Lok Sabha bypoll intensified further after AIUDF chief Badruddin Ajmal took a fresh swipe at Congress MP Rakibul Hussain, making a remark about his food preferences and upbringing.

Reacting to Hussain's earlier comments concerning biryani, Ajmal said, according to a statement circulated on social media, that the Congress leader was "born eating dry fish, not biryani". Ajmal also referred to Hussain as coming from a poor background and questioned how he could have afforded biryani.

The latest remarks have added another layer to an increasingly heated exchange involving Hussain and Assam



Chief Minister Himanta Biswa Sarma during the campaign for the Nagaon bypoll.



Sarma had earlier used the term "Bakasura" while referring to Hussain and subsequently made a controversial remark involving those who were "born to eat biryani". Hussain responded with his own comments on the subject, turning food into an unlikely theme of political campaigning.

Ajmal's latest statement has now brought the AIUDF chief directly into the verbal confrontation. The exchange comes at a time when political parties are intensifying their campaigning ahead of polling on October 6, with votes scheduled to be counted on October 9.

The increasingly personal nature of the remarks has shifted attention away from policy issues and towards the rhetoric being used by political leaders and candidates during the campaign. With polling day approaching, the Nagaon contest is witnessing an increasingly charged political atmosphere, with speeches, counter-statements and personal jibes becoming prominent features of the campaign.

Roha Senior Citizens' Sammelan Observes International Day of Older Persons

ROHA: *The Roha branch of the Assam Senior Citizens' Sammelan observed the International Day of Older Persons with a special programme at the Purani Charia Ali Community Hall, honouring five senior citizens for their contribution and service to society.*

The programme began with the unfurling of the national flag by Roha branch president Jatindra Kumar Parai, followed by the lighting of the ceremonial lamp by executive president Bhadrakanta Nath. Members also paid tribute to deceased members of the organisation through a memorial ceremony.""

The open meeting was presided over by Jatindra Kumar Parai. Branch secretary Girish Chandra Das and joint secretary Prafulla Kumar Nath explained the objectives of the programme, which commenced with the organisation's Sammelan song.

Senior advocate Satyananda Talukdar, who attended as the designated speaker, spoke about the legal safeguards and rights available to senior citizens. State Senior Citizens' Sammelan executive member Hemodhar Hazarika and Roha branch member Ghanakanta Nath also addressed the gathering and highlighted the significance of the International Day of Older Persons.

Five senior citizens-Krishnakanta Sharma, Narayan Hazarika, Prafulla Das, Kadami Saikia and Junu Das-were felicitated on the occasion. Each was presented with a fulam gamusa, seleng, japi and a certificate of appreciation, along with wishes for good health and well-being.

The programme concluded with a performance of the Jatiya Sangeet. Among those present were adviser Maniram Nath, former president Madhab Chandra Nath, executive member Dr Lakshidhar Das, artist and pensioner Abani Kumar Saikia, Neeru Bora, Krishnakanta Tamuli, and Roha Municipal Board deputy chairperson Anima Das, besides members of the Roha branch.



Artistic sculptures and installations adorn the Durga Puja pandal of Behala Young Men's Association amid preparations ahead of the upcoming Durga Puja festival, in Kolkata.

Google Takes AI to Space: Project Suncatcher Satellite Successfully Launched

NEW DELHI: Google has taken an ambitious step towards moving artificial intelligence computing beyond Earth with the successful launch of a prototype satellite carrying the company's specialised Tensor Processing Unit (TPU) chips under Project Suncatcher.

The satellite was launched aboard SpaceX's Transporter-18 rideshare mission, using a Falcon 9 rocket from California's Vandenberg Space Force Base. Google CEO Sundar Pichai welcomed the launch, describing it as an important early milestone for an idea that could potentially reshape the future of AI computing.

Developed in partnership with Planet Labs and SpaceX, Project Suncatcher is aimed at studying whether AI computing infrastructure could eventually operate in space. Google is particularly interested in the potential availability of solar power in orbit, where satellites can have much greater exposure to sunlight than facilities on Earth.

The prototype mission, however, is only an initial experiment. The company must determine how AI processors perform under the harsh conditions of space, including radiation and extreme temperature fluctuations. Google has said that contact with the satellite has been established and that it is operating as expected.

The data collected during the coming weeks will be crucial in assessing the feasibility of space-based AI computing. Researchers will need to examine not only chip performance but also power generation, communication, reliability and the practical challenges of operating computing infrastructure in orbit.

The project comes as demand for AI computing continues to grow, putting increasing pressure on conventional data centres for electricity and cooling.

Project Suncatcher does not mean that space-based data centres are arriving tomorrow. But the successful prototype launch marks a significant experiment in testing whether the next generation of AI infrastructure could one day extend beyond Earth.

Drunk Software Engineer Rams Into Seven Pedestrians in Hyderabad

HYDERABAD: Seven pedestrians were injured after a car allegedly driven by a drunk software engineer rammed into a group of people in Hyderabad's Kamala Nagar area on September 29. Three of the victims reportedly suffered serious injuries.

The incident occurred under the jurisdiction of the Kushaiguda Police Station, where police have arrested the driver, identified as Pawan, and another person who was travelling with him in the car.

According to police, Pawan was allegedly driving under the influence of alcohol when the vehicle struck pedestrians walking along the roadside. The injured persons, reportedly from Bihar, were rushed to a hospital in the ECIL area for treatment.

CCTV footage of the incident has surfaced and is circulating on social media. The footage reportedly shows a group of pedestrians walking along the road before a speeding car approaches from behind and crashes into them.

Police said the vehicle hit the pedestrians while the driver was allegedly intoxicated. The presence of another person inside the car at the time of the incident is also being investigated.

The arrests have brought renewed attention to the dangers posed by drunk and reckless driving, particularly in areas where pedestrians share busy roads with vehicles.

Police have registered a case and are conducting further investigation to establish the complete circumstances surrounding the crash.

The incident once again highlights the potentially devastating consequences of driving under the influence and the need for strict enforcement of road-safety laws.

IUML Leader Praises Pilot Captain Smit Machchhar for Courage

NEW DELHI: Indian pilot Captain Smit Machchhar has received praise from senior Indian Union Muslim League (IUML) leader Panakkad Syed Munavvar Ali Shihab Thangal for his courage and presence of mind during a serious incident aboard a Flydubai flight.



Captain Machchhar was piloting Flydubai flight FZ1073, a Boeing 737 MAX 8 travelling from Dubai to Tel Aviv, when the co-pilot allegedly attacked him and attempted to take control of the aircraft. According to reports, the aircraft rapidly lost altitude during the incident.

Despite sustaining injuries, Machchhar is reported to have managed to regain control of the situation, seek assistance and prevent the alleged attempt from succeeding. The aircraft was subsequently diverted and made an emergency landing at Tabuk in Saudi Arabia with the help of additional pilots.

The flight was carrying 174 passengers, who were reported to have survived the incident. Thangal praised Machchhar's courage and professional commitment.

The 39-year-old pilot is currently receiving medical treatment and has reportedly been moved to Abu Dhabi for further care.

EDITORIAL

From Digital Credits to Real Student Mobility

The National Education Policy (NEP) 2020 placed flexibility at the heart of higher education reform. Its vision is compelling: students should be able to change institutions or programmes, accumulate academic credits, pause their studies and return later without losing their educational progress. The Academic Bank of Credits (ABC) was created to make this vision possible.

India has certainly built an impressive digital foundation. Thousands of higher education institutions are now connected to the ABC system, while millions of academic records have been mapped to students. Yet digital connectivity alone cannot guarantee academic mobility

The real challenge begins when a student wants to transfer credits from one institution to another. A credit stored digitally has value only when another institution is prepared to recognise it. Differences in curricula, course content, examinations, academic calendars and degree requirements can make portability uncertain. Institutional autonomy is important, but students also need clear and predictable rules before they decide to transfer.

There is also an economic dimension that cannot be ignored. Moving to another city may involve additional costs for accommodation, food, transportation and other expenses. For financially constrained families, the formal freedom to transfer may therefore remain largely theoretical.

The next phase of NEP implementation must move beyond counting registrations and digital records. Authorities should publish regular data on actual credit transfers, successful transfers and rejected requests, along with reasons for rejection. Universities should clearly disclose their equivalence and transfer policies so students can make informed choices.

Why ECs Too Are To Blame for India's Worst Electoral Crisis

Jan Jan Vichar
...✍Shikha Mukerjee

Large-scale deletions and appeals have intensified scrutiny of the Election Commission's process Election Commission of India. The total number of adults not eligible to vote in India, 13 crore by some accounts, which is 15 crore by others, is approximately the population of all men, women and children in countries like Mexico, Japan and the Democratic Republic of Congo. These adults are victims of the Election Commission of India's purification of electoral rolls through a new fangled methodology, the software-driven Special Intensive Revision.

The innovations in use of technology and the "logical discrepancies" could have been, in the overwhelming majority of cases, rectified had human intelligence been applied by the electoral registration officers in conjunction with the block level officers, and that would have solved most of the problems. There is evidence to suggest that this is a truthful statement; in West Bengal, where the SIR controversy continues to rage, over 93 per cent of appeals to the Supreme Court-ordered adjudication tribunals, following discoveries of mostly "logical discrepancies," have been found to have been filed by "eligible" voters. In other words, eligible voters were struck off the electoral rolls by the machinery of the ECI.

There are confirmations of reports that voters who exercised their vote in West Bengal have now found themselves scratched off the electoral rolls, post the May elections. Reckoned at its current speed of disposing appeals, the tribunals could take 12 years or more to restore voting rights to some 37 lakhs of voters in West Bengal. If this is the consequence of the ECI's innovations in one of India, what then will happen to the 13 crore or 15 crore adults living with uncretainty as the thrid phase of SIR nears its end?

The question of who is responsible for this enormous mess is "problematic", as Chirag Paswan, Union minister and leader of the Lok Janashakti Party, described it would be "if people begin to doubt the electoral process itself". Is it the chief election commissioner, Gyanesh Kumar, or the trio, meaning the other two election commissioners, Messers Sandhu and Joshi, as well? The issue was raised by the news report in the Indian Express that, finally, shook the Indian political establishment which, it must be pointed out, already knew the consequences of the ECI's decisions as the numbers of delisted voters zoomed. But was it just one man who led the assault on India's free and fair election process or was it all three?

The simple answer is all three. Regardless of how culpable Gyanesh Kumar is, neither of the two ECs quit office for the misdemeanours of the Election Commission. It is the Election Commission which has acted against the interests of the people, meaning that national interest has been dangerously compromised by the decisions of the trio selected to see that the machinery of elections runs without a glitch. As many as 13 crore or 15 crore glitches are not a pardonable mistake; the magnitude points to a reckless abuse of power amounting to irresponsibility, at the root of which is the 2023 law giving immunity from consequences to the ECs for decisions taken. If the two election commissioners, Sukhbir Singh Sandhu and Vivek Joshi, had differences with the chief election commissioner, who incidentally is not their boss, the difference between the three being of designation rather than authority, they had every reason, backed by the authority they enjoyed, to say so. Earlier election commissioners did. Legendary election commissioner T.N. Seshan challenged the appointment of M.S. Gill and G.V. Krishnamurthy. The Supreme Court rapped his knuckles for thinking his status was superior to his colleagues. In 2009, chief election commissioner N. Gopalaswami sent a 90-page report to the President asking for the removal of his colleague, election commissioner Navin Chawla. Differences of opinion are routine in a collegium-style commission or judiciary or even the Cabinet or as is so public, inside corporate boardrooms as in the Tata Trusts-Tata Sons case. Dissent, in writing, is another matter. Taking responsibility for dissenting is one step up, where resignation is the usual action taken. Neither Mr Sandhu nor Mr Joshi resigned; hiding behind a leak, these two individuals, guilty of gross violation of the law, did not make their views public and fall on the sword, as it were. These two ECs actually wrote official memos to the Cabinet Secretary of India, knowing that it was a grave transgression of the autonomy principle that underlies the constitutional provision that set up the Election Commission in the first place. Demanding the resignation or submitting a motion calling for the impeachment of CEC Gyanesh Kumar in the Lok Sabha and Rajya Sabha is good politics. Punish the guilty is what the law does, and legislative power is all about making good laws. However, the impeachment in a sense, absolves the CEC and, in fact, the trio of all responsibility for the SIR mess and the crisis of confidence in the public mind about the impartiality, neutrality and basic competence of the Election Commission as an institution. For the first time in independent India, the totality of all voters, 97.97 crore Indians in 2024, equal to the number of all adults resident in India, have lived with the uncertainty of being declared "ineligible", and subject to the threat by Gyanesh Kumar endorsed by the Union home minister Amit Shah in Lok Sabha on December 10 that the purpose of the SIR process is to DETECT, DELETE, DEPORT.

While detection and deletion are the usual job of the Election Commission — done through the now delayed Special Summary Revision and the additions that happen as a matter of routine during the usual Summary Revisions — deportation as a consequence of electoral roll revision was a new addition. After DETECT and DELETE, that was normal revision process, the DEPORT was genuflection to the BJP's political agenda of excluding allegedly two crore "ghuspaithiyas", illegal Muslim immigrants from Bangladesh, who apparently had changed the "demography" of the border districts in Assam and West Bengal.

The politics of demographic change posing a threat to the Hindu majority by the Muslim minority underlay the DEPORT conclusion to the Election Commission's SIR exercise.

Gandhiji: The Mahatma and the Controversies We Rarely Discuss

Jan Jan Vichar
...✍Feature Desk

Every October 2, India remembers Mohandas Karamchand Gandhi as the Mahatma-the apostle of non-violence, the champion of truth and one of the central figures of India's freedom struggle. His image is everywhere. His name is invoked across political ideologies. His words are quoted by leaders who otherwise disagree on almost everything. Yet there is another Gandhi-the Gandhi of contradictions, disagreements and uncomfortable questions.

To examine that Gandhi is not to erase his contribution. It is to recognise that history becomes weaker when great personalities are transformed into flawless icons.

The uncomfortable South African chapter

One of the most debated aspects of Gandhi's life concerns his early years in South Africa. Historical research has documented instances in which Gandhi used deeply problematic language about Africans and sought to distinguish the Indian community from the Black population within the racial hierarchy of colonial society. Some of his early writings contain attitudes that, judged by today's standards, are unmistakably disturbing. The historical context explains some of these attitudes but does not erase them.

Gandhi was a young lawyer fighting discrimination against Indians, and his political consciousness evolved considerably during his South African years and afterward. His later philosophy moved toward a much broader opposition to racial and imperial oppression. But that evolution itself is important. The Gandhi of his youth was not identical to the Gandhi who later became a global symbol of equality and non-violent resistance.

Gandhi and Ambedkar: The battle over caste

Perhaps the most consequential disagreement in Gandhi's political life was with Dr B.R. Ambedkar. Both opposed untouchability, but their approaches were fundamentally different. Gandhi sought to reform Hindu society and eliminate untouchability. Ambedkar argued that the problem was much deeper: caste itself had to be dismantled, and oppressed communities needed independent political power. Their confrontation came to a head in 1932 over separate electorates for the Depressed Classes. Gandhi opposed separate electorates, fearing that they would divide Hindu society. Ambedkar supported them as a means of ensuring genuine political representation. The dispute eventually produced the Poona Pact, under which reserved seats for the Depressed Classes were provided within a joint electorate. The agreement remains historically significant precisely because it represented a compromise between two very different visions. For Gandhi, social unity was essential. For Ambedkar, social justice required political autonomy. Any serious discussion of Gandhi's legacy must therefore include Ambedkar's criticism rather than presenting Gandhi's position as the final word on caste.

The power-and controversy-of Gandhi's fasts

Gandhi's fasts were among his most powerful political instruments. He regarded fasting as a form of moral discipline and self-purification. But the method also generated a difficult political question: when a leader possesses enormous moral authority, can a personal act become a form of political pressure on others? The Poona Pact illustrates this tension. Ambedkar later remained critical of the circumstances surrounding the agreement and the pressure created by Gandhi's fast. This does not diminish Gandhi's sincerity. It demonstrates something more complicated: moral authority can itself become political power. That is a question worth remembering in every age.

Gandhi versus the revolutionaries

Gandhi's absolute commitment to non-violence also placed him at odds with revolutionaries who believed armed resistance against colonial rule could be justified. The disagreement was not simply about tactics. It concerned the nature of freedom itself. Gandhi believed that violent means could corrupt the society created after independence. Others argued that an empire built through violence could not necessarily be defeated through moral persuasion alone. His differences with Subhas Chandra Bose reflected this larger ideological divide. Both wanted independence, but they differed profoundly over strategy, political organisation and the role of force. The freedom struggle was therefore not a single Gandhi-led story. It was a much larger movement containing competing visions of India's future

The controversy over Gandhi's celibacy experiments

The most personal controversy surrounding Gandhi concerns his experiments with brahmacharya. In his later years, Gandhi conducted experiments in self-control that included sleeping beside young women, including his grandniece Manu Gandhi. Gandhi regarded these experiments as tests of his ability to maintain celibacy and spiritual discipline. But the practice has generated serious ethical questions. The fact that Gandhi considered the experiments spiritually meaningful does not automatically resolve questions concerning age, consent, vulnerability and the enormous power imbalance between him and the women involved. At the same time, his views must be understood within his broader philosophy of self-restraint and his campaigns against several forms of social oppression. The contradiction remains. Gandhi could challenge social conventions while simultaneously holding intensely personal and restrictive ideas about sexuality.

Women: Empowerment and contradiction

Gandhi played an extraordinary role in bringing Indian women into mass politics. Women participated in civil disobedience, protests, picketing and the freedom movement in large numbers. Yet Gandhi's ideas about women were not identical to modern concepts of gender equality. He placed enormous emphasis on chastity, sacrifice, purity and self-control. Thus, even here, the historical picture is mixed. He expanded women's political participation while retaining ideas about sexuality and morality that many contemporary readers would question.

The Gandhi India remembers

The temptation in today's political culture is to turn historical figures into political property. Gandhi is claimed by different ideological camps because his legacy contains elements that speak to very different political traditions. But Gandhi cannot be reduced to a few quotations. The man who preached equality had troubling racial attitudes in his youth. The man who fought untouchability disagreed profoundly with Ambedkar about how caste should be destroyed. The apostle of non-violence opposed those who believed armed struggle was legitimate. The advocate of women's public participation held controversial views about sexuality and morality. The champion of truth was also a thinker whose ideas evolved repeatedly throughout his life. These contradictions do not make Gandhi insignificant. They make him human-and therefore historically worth examining.

Beyond worship and rejection

India does not have to choose between worshipping Gandhi and rejecting him. There is a more mature alternative: understand him. That means reading Gandhi alongside Ambedkar. Examining his South African record alongside his later transformation. Studying his relationship with Bose. Discussing his fasts, his economic ideas, his views on caste, religion, women and sexuality without fear or reverence. A democracy should be able to question even its most revered figures. Gandhi's legacy should therefore not be protected from scrutiny. Nor should his achievements be erased because his record contains contradictions. The real Gandhi was neither a flawless saint nor a figure who can be dismissed through a list of controversies. He was a complex political and moral thinker whose ideas changed over time-and whose life continues to provoke arguments about power, equality, freedom, religion, caste, violence and truth. Perhaps that is the Gandhi India needs to remember today. Not the Gandhi who is beyond question, but the Gandhi who forces us to ask difficult questions. Because when history becomes mythology, truth loses its power. And Gandhi, above all, claimed that truth mattered.

When Politics Entered the Game

Tej Pratap–Manish Kashyap Clash Raises the Heat in Rise & Fall 2

Jan Jan Vichar
...✍Entertainment Desk



A fireworks challenge turns into a battle over authority, effort and respect as tensions rise between the Rulers and Workers

Reality television thrives on competition, but in **Rise & Fall 2**, the competition is increasingly spilling beyond the boundaries of the tasks. The latest episode turned a fireworks challenge into a heated confrontation between Tej Pratap Yadav and Manish Kashyap, as an argument over the game quickly expanded into a larger clash over authority, effort and the treatment of contestants.

The season, hosted by former Indian cricketer Virender Sehwag, brings together 15 contestants from television, entertainment, social media and public life. They are divided into Rulers and Workers, with the unequal distribution of power forming the central theme of the game. The latest fireworks task exposed just how intense that power struggle can become.

A task designed to test patience

The challenge appeared straightforward: Workers had to prepare fireworks that would pass a quality inspection and, in the process, increase the Prize Pot. But there was a major catch. Repeated rejection of fireworks could force the Workers to eliminate one of their own members. The pressure was therefore not limited to completing the task. Every rejected firework potentially threatened the position of someone inside the Basement.

The tension began early when Shehzad Poonawalla rejected a firework and questioned whether his decision was being viewed as unfair. The exchange with Priyanka Chahar Choudhary added another layer of friction before the task moved into more serious territory. Then came the rejection that changed the mood.

Manish's firework becomes the flashpoint

When Shehzad rejected a firework prepared by Manish Kashyap, Manish objected to the decision. Tej Pratap Yadav became involved in the discussion, and what began as a disagreement over the task soon turned into a much sharper confrontation.

Tej accused Manish of attempting to manoeuvre the situation in his favour. Manish, on the other hand, argued that the Workers were putting in the effort and were not being treated fairly by those in power. The argument gradually moved beyond the rejected firework.

Issues of identity, privilege, hard work and the difference between Rulers and Workers entered the conversation. At one point, Tej objected to politics being brought into the game. The exchange became one of the episode's major talking points-not simply because two contestants disagreed, but because it exposed the central tension built into Rise & Fall: those who exercise power and those who must work under it.

Rejections turn into a survival battle

The fireworks challenge became even more difficult when the quality-control officials could not reach a consensus on certain fireworks. The Ultimate Ruler was eventually given the authority to make the final decision. Then came another blow. Three fireworks were rejected in one round, leaving the Workers with the difficult choice of sacrificing one of their own. Anish Bhagat volunteered to leave, but the crisis returned in the following round. After Kajal Raghwani's mistake involving the colours, all three fireworks in that round were rejected. Niharika Tiwari was subsequently selected to leave the game. The decision visibly affected her and led to another confrontation, this time involving Gautam Gulati. Kaira Anu attempted to intervene as tensions escalated but eventually stepped away from the situation. What was supposed to be a manufacturing challenge had now become a test of loyalty, patience and internal unity.

36 fireworks made only 20 approved

The Workers eventually managed to recover some ground. Three fireworks were approved in the fourth round, while all the fireworks in the fifth round passed inspection. But by then, the damage had already been done. The Workers produced 36 fireworks, of which only 20 were approved. The result added Rs. 10 lakh to the Rulers' Prize Pot and handed the Rulers victory in the first Prize Pot challenge.

The financial gap also became significant. The Rulers' pot reached Rs. 38 lakh, while the Workers were left with Rs. 3.25 lakh. For the Workers, therefore, the task was not merely a lost challenge. It widened the power and financial divide that already defines the Tower.

The Penthouse is changing too

While the Basement was dealing with the fallout of the fireworks challenge, the equations in the Penthouse were also shifting. Swara Bhasker praised Shehzad Poonawalla for standing by his position during the task. Meanwhile, the confrontation between Tej Pratap and Manish added another dimension to the existing power equations. Tej had already emerged as a major power figure in the game. He became the first Ultimate Ruler after winning the petrol challenge, giving him considerable influence within the Tower. With Manish increasingly vocal about the Workers' position, their confrontation now has the potential to become one of the more closely watched personal dynamics of the season.



Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary